भगवत् कृपा

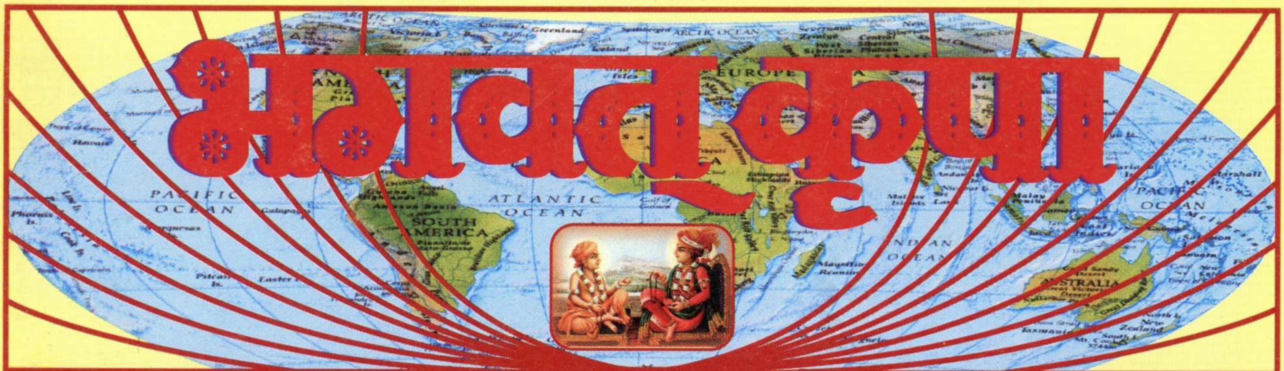

साकार प्रगट ब्रह्म को जो पहचाने, वो परम को पाये

वर्ष 28 अंक : 3 | 16.5.2005 सोमवार (मई-जून) | प्रति अंक : 10.00

स्वामिनारायण संप्रदाय के मील के

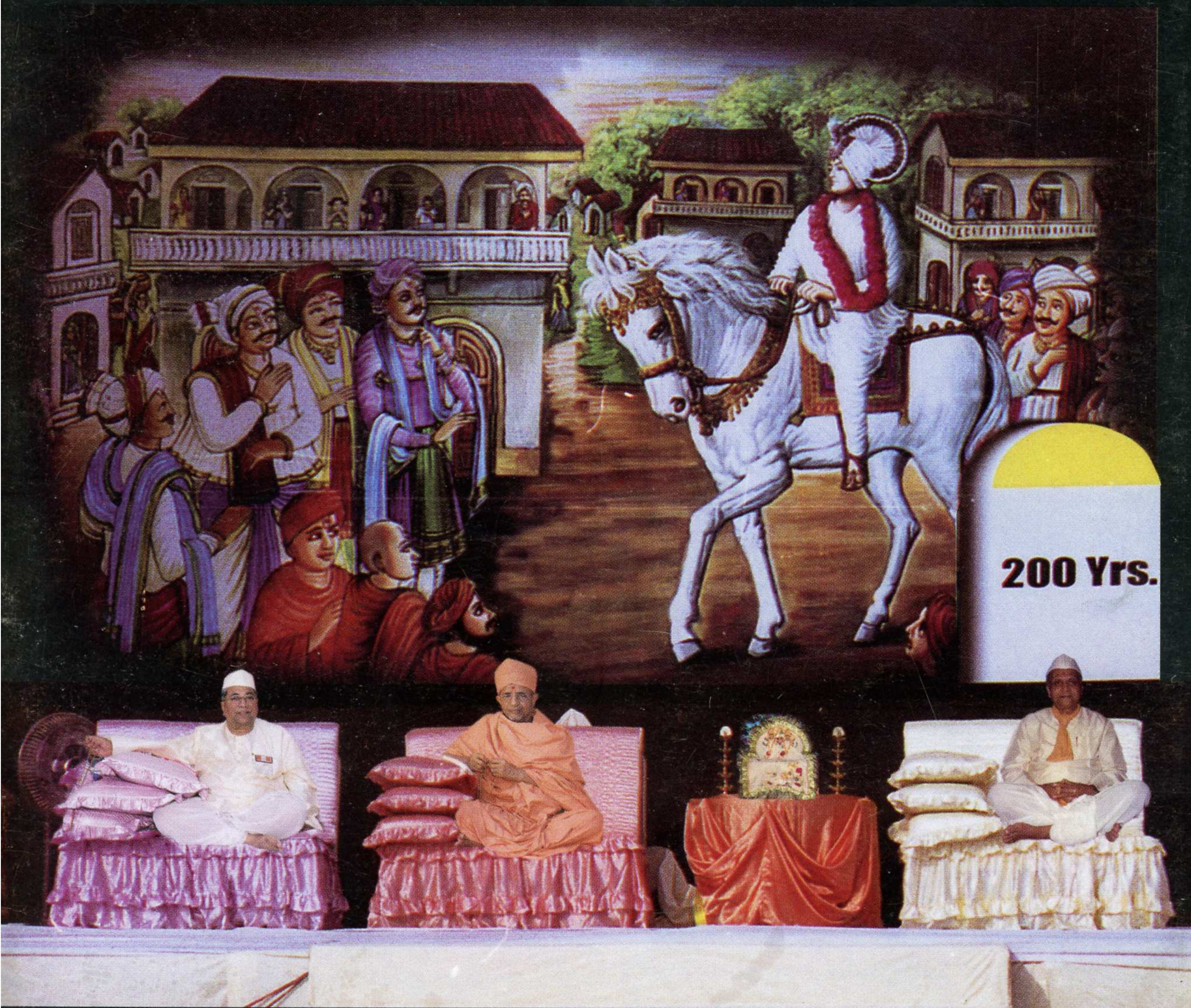

पूर्वतैयारियाँ—निरीक्षण

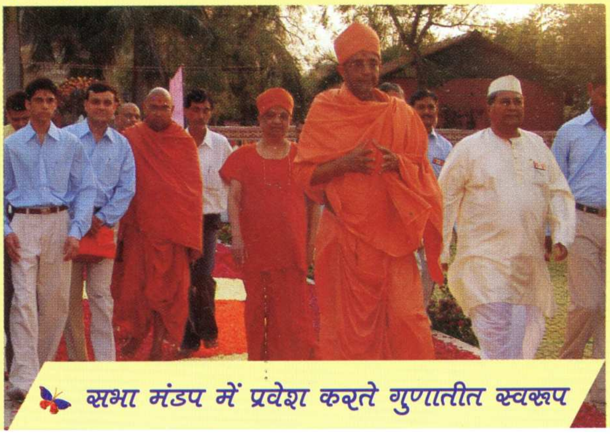

सभा मंडप में प्रवेश करते गुणातीत स्वरूप

पत्थर रूपी दो ऐतिहासिक प्रसंग

27 मार्च — प.पू. साहेब एवं प.पू. गुरुजी की जयंती की स्मृतियों का खज़ाना...

*** मोस्ट इन्ट्रेस्टिंग फंक्शन है।**

— प.पू. स्वामिजी

*** बहुत लाईव्ली एट्मॉस्फियर चल रहा है।**
साढ़े पाँच घंटे कहाँ निकल गए, वह पता भी नहीं चला।

— प.पू. साहेब

*** मैं अभी भी फंक्शन के एहसास में हूँ।**

— प.भ. सुनील मग्गु-दिल्ली

*** यहाँ कुछ अलग ही चीज है...**

— प.भ. संजयभाई-अमदावाद

*** बाकी सब जगह भी गया हूँ,**
पर उसके मुकाबले यहाँ के माहौल में जमीन-आसमान का फर्क है।

— प.भ. अश्विनभाई-वडोदरा

उपरोक्त वाक्यों को पढ़ कर शायद हम यही सोचेंगे कि हर वर्ष किसी ना किसी को ऐसे कुछ ना कुछ अनुभव तो होते ही हैं। इसमें नई बात क्या ?

पर, भव्य प्राप्ति की हमें ऐसी महिमा दिल की सच्चाई से-गहराई से नहीं है कि प्रगट प्रभु-प्रभुधारक ऐसे संतों के गुणगान गाने या सुनने से भी हमारे दोष-विकार टल जाते हैं। अनेक कठिन गुत्थियाँ, समस्याओं के समाधान मिलते हैं... जीवन जीने की एक नई सूझ-दिशा मिल जाती है... कोई करामत-सही चाबी हाथ लग जाती है।

इन उत्सवों की महिमा बताते हुए श्रीजी महाराज ने वचनामृत के गढडा प्रथम प्रकरण–३ में लिखा है कि– ***'...हम विष्णुयज्ञ करते हैं तथा जन्माष्टमी, एकादशी आदि व्रत एवं उत्सव प्रति वर्ष करते हैं और उनमें ब्रह्मचारी, साधु, सत्संगियों को एकत्र करते हैं। यदि कोई जीव पापी भी हो और उसे अंतकाल के समय इन सब की स्मृति हो जाए, तो उससे उसे भगवान के धाम की प्राप्ति हो जाती है...'***

तो, आईए क्यों ना हम दिव्यता के इस प्रवाह को-दिव्य उत्सव को लेखनी द्वारा आप तक पहुँचाने की सेवा करके खुद को धन्य बनाएं... उत्सव का विस्तृत रूप विवरण देने के पीछे एक भावना यह भी है कि दूर-सुदूर बैठे सभी हरिभक्त जो उत्सव में किसी कारणवश हाज़िर ना हो पाए हो, उन्हें **'भगवत् कृपा'** द्वारा उत्सव का लाभ मिल पाए।

27 मार्च से करीब **पन्द्रह-बीस दिन पहले से** ही 'ताड़देव' के परिसर में प.पू. साहेब व प.पू. गुरुजी के प्रति गुरुभक्ति अदा करने की भावना से संतों, युवक, बहनें, गृहस्थ तैयारियों में लग पड़े थे... और दो-तीन दिन पहले तो गुजरात-हरियाणा-पंजाब से हरिभक्त आने भी लगे...

सभी जिस उत्सव के लिए खूब आतुर थे वह घड़ी आ ही गई। **27 मार्च** की सायं **ताड़देव मंदिर जगमगा उठा।** सारा परिसर आगे से पीछे तक फूलों से सुसज्जित था। स्वामिनारायण संप्रदाय के मील के पत्थर रूपी दो ऐतिहासिक प्रसंगों को सभा मंच की पृष्ठभूमि में दर्शाया था।

पहला प्रसंग – श्रीजी महाराज को गढडा आए इस साल19 फरवरी – महाशुक्ला एकादशी को **दो सौ वर्ष** पूरे हुए हैं... गढ्डा यानि श्रीजी महाराज का प्रिय व निवास स्थान ! श्रीजी महाराज लगातार तीस वर्षों तक भक्तराज दादाखाचर, जीवुबा – लाडुबा आदि भक्तों की भक्ति के आधीन होकर गढडा में रहे और बोले भी कि – ***'मैं गढडा का और गढडा मेरा'।***

धन्य है दादाखाचर की प्रेम भक्ति और अजोड़ समर्पण को कि श्रीजी महाराज ने अपने जीवन का अधिकांश समय गढडा में बिताया व उन्हें अपनी लीलाओं - चरित्रों और मूर्ति का सुख दिया.....

दूसरा प्रसंग – ब्रह्मस्वरूप गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज कहते– ***'अक्षरपुरुषोत्तम के लिए सिर मुंडवाया है !'*** वो अक्षरपुरुषोत्तम की उपासना को व्यापक करने संवत् 1962 की कार्तिक पूर्णिमा के उत्सव के दूसरे दिन गुरुहरि **शास्त्रीजी महाराज ने** 41 वर्ष की आयु में **वड़ताल मंदिर से ब्र.स्व. श्री कृष्णजी अदा की आज्ञा से महाप्रस्थान किया। उस दिन को भी अबकी सौ वर्ष** पूरे हो रहे हैं। ये दो प्रसंग चित्रित किए थे। इन दो प्रसंगों में ही मानो 'स्वामिनारायण संप्रदाय' का पूरा इतिहास समाया हुआ है !

सवा चार बजे के करीब प.पू. स्वामिजी, प.पू. साहेब, प.पू. गुरुजी, प.पू. शांतिभाई, प.पू. वशीभाई के सान्निध्य में **प.भ. कौशिकभाई-सौ. रूपा भाभी के सुपुत्र 'ध्रुव'** की भागवती दीक्षा निमित्त करी महापूजा में सभी एकत्रित हुए।
प.पू. वशीभाई ने दीक्षार्थी को जनेऊ पहनाया,
प.पू. गुरुजी ने कपाल पर चंदन की अर्चा करके कंठी पहनाई, **प.पू. स्वामिजी** ने गातरिया (चद्दर) ओढ़ा कर गुरुमंत्र दिया और गुरुहरि **शास्त्रीजी महाराज द्वारा आरंभ की श्री अक्षरपुरुषोत्तम युगल उपासना प्रवर्तन की शताब्दी की स्मृति** रूप **'यज्ञप्रियदास'** नाम दिया।
तत्पश्चात्, **प.पू. साहेब** ने पाघ पहना कर पूजा दी।

महापूजा के बाद सभी ने पंडाल की ओर प्रस्थान किया। आज भक्तों का आनंद समाता नहीं था। तालियों की गड़गड़ाहट के बीच फूलों से सुशोभित गालीचे पर चल कर सभी स्वरूप जब मंच की ओर आ रहे थे, तब गलीचे के दोनों ओर अबकी बार के निमंत्रण कार्ड पर बने हाथी और खरगोश की बोधकथा के प्रतीक रूप **'उमंगभरी जी हजूरी'** करते खरगोश की ड्रेस में खड़े छोटे बच्चे हाथ जोड़ कर-गर्दन हिला कर अपनी भावना प्रगट कर रहे थे। और... तभी **प.भ. राकेशभाई** ने–

'आओ रे भाईयों, आओ रे भक्तों, आओ अक्षर के मुक्तों,
संतरूप में पधारे स्वयं श्री हरि,
गुरुजी रूप हमको मिले काकाश्री
नाचो मिलजुल थनक थन थई...'

भजन गाया और उसी दौरान मंच पर दो युवक – **पू. विपिन व पू. हृदय वर्मा** ने इसी भजन की पंक्तियों पर भावमुद्रा से नृत्य प्रस्तुत किया।

आज के **उत्सव की एक विशेषता** यह थी कि गुणातीत स्वरूप जब मंच की ओर बढ़ रहे थे कि सभी भक्तों की आँखें यकायक पलभर के लिए तो अचंभे में एकदम स्थिर हो गईं... **प.पू. साहेब ने प.पू. गुरुजी की प्रार्थना स्वीकार करके आज प.पू. काकाजी की इदम् स्मृति देता हुबहु वेश जो धारण किया था !** जिन भक्तों ने प.पू. काकाजी के स्थूल दर्शन किए थे और जिन्होंने नहीं किए थे... उन सभी की ही आँखें यह दर्शन करके नम हो गईं ! सभी की चित्तपट्टी पर यह एक यादगार स्मृति हमेशा बनी रहेगी। स्वरूपों के विराजमान होने के बाद धुन-भजन से सभा की शुरुआत हुई।

प.भ. नासा साहेब, प.भ. वालिया साहेब, अनुपम मिशन के **पू. शांतिभाई साहेब,** मुंबई से आए प.पू. गुरुजी के प्रिय सखास्वरूप **पू. वशीभाई, प.भ. ओ.पी. अग्रवालजी** ने प.पू. साहेब व प.पू. गुरुजी का खूब मार्मिक माहात्म्य दर्शन कराया। प.पू. साहेब व प.पू. गुरुजी की जयंती निमित्त **श्री दीपक कुमारजी** ने अत्यंत जोश से भक्तिभरे दिल से भजन सुना कर सभी को भक्ति रस में तरबोर कर दिया। तत्पश्चात् हारविधि का कार्यक्रम शुरु हुआ... सभी केन्द्रों ने अपनी भावना व्यक्त करते हुए प.पू. स्वामिजी, प.पू. साहेब व प.पू. गुरुजी एवं महानुभावों को हार व कलगी अर्पण करी।

अबकी नए वर्ष की शुरुआत में ही प.पू. गुरुजी बोले थे कि **सूर्य बदल गया है –** यह बात हम विश्वास से मानें।

इसी बात का **संकेत देते हुए अक्षरज्योति की बहनों ने प.पू. साहेब व प.पू. गुरुजी के लिए** नए आकार के सूर्य का **हार** जो बनाया था, उसे **प.भ. नासा साहेब** और **प.भ. बलरामजी** ने अर्पण किया। दिल्ली गुणातीत समाज की ओर से **प.पू. साहेब को शाल** ओढ़ा कर **प.भ. समीरभाई** ने अभिवंदन किया और अबकी बार निकले दीवाली कार्ड पर श्रीजी महाराज व उनकी पाघ में ही समाए सभी स्वरूपों की बड़ी **मूर्ति–**जो कि **प.पू. साहेब को** खूब भा गई थी, वह **प.भ. पुरी अंकल** ने अर्पण करी। ताड़देव-मुबंई मंडल की ओर से **प.भ. घनश्यामभाई अमीन व प.भ. हेमंत मर्चंट** ने एक **नाईट लॅम्प** और एक **दीपक** की प.पू. गुरुजी को सांकेतिक भेंट दी। साथ ही **पू. वशीभाई** ने मार्मिक प्रार्थना करी कि–

'...हे गुरुजी ! गुरुहरि योगीजी महाराज और गुरुहरि काकाजी की सिर्फ बोधकथायें या बातें ही नहीं, उनकी छोटे से छोटी अत्यंत अल्प चेष्टा को भी आपने अपने जीवन में बड़े प्रज्वलित दीपक की तरह इस्तेमाल किया तो आप स्वयं प्रकाशित बने और आप के साथ जुड़े हुए विशाल भक्त समुदाय के दिव्य पथप्रदर्शक भी बने। आप की यही तो विशिष्टता है कि किसी भी बात या प्रसंग के पीछे छिपे हुए आध्यात्मिक रहस्य को आप बाहर लाकर सब के लिए उसे सुलभ करते हैं। यह निमंत्रण पत्रिका आप की ऐसी ही अंतरखोज और करुणा की मिसाल है ना ?

...आप से प्रार्थना है कि नाईट लॅम्प के प्रतीक समान हमारे आलसीपन और प्रमाद को विलीन करके इस दीपक को प्रज्वलित करके हम सदा पूर्ण जागृत रहें ऐसे आप आशिष दो।'

दूसरी ओर **कु. अनु** ने गुणातीत ज्योत से आईं **प.पू. ज्योति बहन** का हार पहना कर स्वागत किया। जिन्होंने हमें प.पू. गुरुजी दिए ऐसी **पू. ललिताबा** का **कु. गुरकँवल (गुग्गु)** ने स्वागत किया। हाल ही में मुंबई के स्व. डॉ. मांडके की बेटी की शादी दौरान प.पू. दीदी के संपर्क आई कत्थक नृत्य कलाकार एवं टी.वी. आर्टीस्ट **प्राची शाह** भी प.पू. गुरुजी की जयंती निमित्त आई थीं। उनका स्वागत **कु. प्रीति ठक्कर** ने किया।

पश्चात्, विख्यात पार्श्व गायक **श्री महेन्द्र कपूरजी** और उनके सुपुत्र **श्री रोहन कपूरजी** जो कि गुणातीत परिवार–दिल्ली के आत्मीय स्वजन हैं, उन्होंने भजनों और देशभक्ति के गीतों की झड़ी लगा कर सभी में खूब जोश भर दिया। समय का तो किसी को ख्याल ही नहीं रहा था। माहौल ऐसा था कि यूं ही अक्षरधाम की दिव्य सभा चलती ही रहे, चलती रहे... शायद इसी कारण मुंबई से आए **सौ. ऊषा खण्डेलवालजी** अपने पति श्री खण्डेलवाल साहेब को फोन पर सभा में ही बोल पड़ी कि–***'आज आपने कितना अच्छा फंक्शन मिस कर दिया है ?'*** दूसरी ओर पंजाब से आए **प.पू. उत्तमस्वामिजी के सेवक पू. निष्कामस्वामी** ने भजन गाकर भक्ति अदा करी।

समय खूब हो चुका था, लेकिन आज के दिन स्वरूपों के आशीर्वाद प्राप्त करने का अनमोल मौका तो लूटना बाकी था। तो, सर्वप्रथम **प.पू. गुरुजी** ने सभी पर आशिष बरसाए और प.पू. साहेब की जयंती निमित्त उनका एक मार्मिक प्रसंग भी बताया। **प.पू. साहेब** ने अद्भुत जोशभरी अपनी भाषाशैली में प.पू. गुरुजी का माहात्म्य गान करते हुए सभी को आशिष प्रदान किए। **प.पू. साहेब के बोलने के अंदाज से ऐसा लगता था कि आज इस मौके पर मैं कितना कुछ बोल दूँ।** अंत में **प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी** ने बहुत ही कम शब्दों में दिल्ली के मुक्तों को मानो जाग्रत करते हुए-आध्यात्मिकता की ओर बढ़ने आशीर्वाद बरसाए।

इस उत्सव की अनोखी विशेषता यह भी थी कि उत्सव लगभग पाँच-साढ़े पाँच घंटे चला, लेकिन ना तो कोई बोर हुआ और ना ही किसी को थकान हुई; बल्कि कुछ पा लेने की ही उमंग सभी के चेहरों पर स्पष्ट दिखाई पड़ती थी... और इसी उमंग से प्रसाद लेकर सभी विदा हुए !

दूर-सुदूर के सभी हरिभक्त – गुणातीत स्वरूपों के आशिष व भक्तों के अंतर के उद्‌गारों से लाभान्वित हो सकें, इस भावना से प्रस्तुत कर रहे हैं–

प.भ. ब्रिगेडियर नासा साहेब

...फौज की मुशाबहत कहा जाए तो गुरुजी नार्धन कमांडर हैं, पूरे नार्थ में छाए हुए हैं और साहेबजी वहाँ पर बहुत बड़े संत हैं–अपनी टेरीटरी में, इंग्लैंड में, अमेरिका में। अपनी जगह पर वो बहुत बड़े संत हैं। स्वामिनारायण संस्था से जुड़े मुझे करीब 1-15 साल हुए हैं। ऐसे दो महान संत का यहाँ इक्ट्ठा जन्मदिन होना आज मैं पहली बार देख रहा हूँ, बहुत ही खुशी की बात है। इसका बहुत ज्यादा श्रेय गुरुजी को जाता है, जो मैं बाद में बताऊँगा।

दूसरी बात– आज का दिन बहुत इम्पॉर्टन्ट इसलिए है कि हमारे जनरल वालिया न्यूमिरोलॉजी में बहुत विश्वास करते हैं और नौ के अंक को बहुत महत्त्व देते हैं। आज सत्ताईस तारीख है, इसका जोड़ नौ बनता है। साथ ही जिस प्लेन से साहेबजी आए उसका नंबर भी जमा करके नौ बनता है। सब शुभ ही शुभ है। इस शुभ दिन पर मैं साहेबजी को–गुरुजी को बहुत बधाई देता हूँ और बहुत दीर्घ आयु तक इनके स्वस्थ रहने की कामना करता हूँ। **गुरुजी बहुत ही इनोवेटिव हैं...** मैं तो कहता हूँ कि अगर ये आर्मी में होते तो चीफ ऑफ आर्मी स्टाफ होते। किसी ईन्डस्ट्री में होते तो धीरुभाई अंबानी होते या लक्ष्मीनारायण मित्तल होते। **हर चीज में वे बहुत ही डिटेईल में जाते हैं।**

आठ-दस साल से देख रहा हूँ कि पप्पाजी जब स्वस्थ थे और आते थे तो गुरुजी पप्पाजी से आशीर्वाद पाते थे। स्वामिजी भी तकरीबन आते थे, लेकिन साहेब इतना नहीं आते थे। जब पप्पाजी अस्वस्थ हुए, तो पिछले साल गुरुजी की ख़्वाईश कहीए–विनती कहीए–गुरुजी ने ये दो बड़े संतों से यह प्रार्थना करी कि अब हर साल आप आया करें–हमारे साथ रहें। इसका बहुत श्रेय मैं गुरुजी को देता हूँ कि उन्होंने अपना जन्मदिन साहेब के जन्मदिन के साथ मिला दिया। साहेबजी का जन्मदिन धुलेण्डी पर आता है और गुरुजी का भले 13 मार्च को आता है, लेकिन दोनों का इकट्ठा कर दिया... ये सब गुरुजी की इनोवेशन है।

आज मैं देखता हूँ कि गुरुजी का समाज बहुत बढ़ता जा रहा है ; ना कि दिल्ली में–पूरे पंजाब में भी, यू.पी. में भी, और जगह भी। और... जैसे गुरुजी कहते हैं कि मुझे नंबर की ज्यादा इम्पॉर्टन्स नहीं है, नंबर तो हो सकता है लेकिन नंबर में डेप्थ होनी चाहिए। मैंने तकरीबन गुरुजी की सभाएं एटेन्ड करी हैं। **मेरा अपना मानना यह है कि उनके मुक्तों में काफी डेप्थ है, खाली नंबर ही नहीं है।** गुरुजी कन्टीन्यूअसली उनकी सोच पर मार करते रहते हैं ताकि उनकी गहराई और बढ़ती जाए।

गुरुजी का काम बहुत कठिन है। वो इसलिए कि **गुजरात में लोग बहुत भक्त प्रकृति के हैं। पंजाब ऐसा नहीं है, नॉर्थ इंडिया ऐसा नहीं है। वो आसानी से नहीं मानते हैं। ऐसे में एक समाज बनाना,** एक-एक आदमी को चुनना, एक-एक फूल को चुनना और माली की तरह उसको सींचना – **ये गुरुजी का काम है।** गुरुजी ने वह बहुत अच्छी तरह करा है। नॉर्थ इंडिया के लोगों में दो चीज हैं कि एक तो वो साधुओं में इतना एतबार नहीं करते जो कि **गुरुजी ने बहुत एतबार बिठाया है।** दूसरा यह कि साधु में भगवान को देखने की बात इन्हें हज़म नहीं होती है। वे मानते हैं कि साधु-साधु है, वो भगवान का स्वरूप नहीं है। लेकिन हम जो जुड़े हुए हैं, उन्हें तो ऐसा ही लगता है। **इस बात को मद्देनज़र रखते हुए गुरुजी का इतना बड़ा समाज तैयार करना बहुत ही अनथक प्रयास है** और मेरे ख्याल में इस अनथक प्रयास में इनकी मदद करी है काकाजी ने, योगीबापा ने– स्वामिनारायण भगवान ने इनका हाथ पकड़ कर रखा है और उनको आगे बढ़ाया है और... उन्होंने अपने भक्तों को आगे बढ़ाया है। **मैं कहूँगा कि इन्होंने बहुत कठिन काम करके दिखाया है।**

गुरुजी हर वक्त आपकी सोच पर चोट लगाते हैं। देखा जाए तो **जिंदगी में सोच ही इम्पॉर्टन्ट है कि हम क्या सोचते हैं ?** आपको डिप्रेशन होता है, क्योंकि आपकी सोच कमजोर है। आपको कई बीमारियाँ होती हैं, क्योंकि आपकी सोच कमजोर है। वो ही बीमारियाँ किसी और को होती हैं, वो टल जाती हैं। हमारे एक दोस्त स्कूटर पर जा रहे थे और उनके पीछे उनकी बीवी बैठी हुई थी। रिंग रोड पर कब उनकी बीवी स्कूटर से गिर गई उनको पता नहीं लगा। वो अपने स्कूटर

पर चलते गए और बीवी से बोलते रहे। तब एक कार ने ओवरटेक करके कहा कि आप किससे बोले जा रहे हो, आपकी बीवी तो पीछे गिरी पड़ी है। वो हैरान होकर वापिस मुड़ा। वहाँ गया और बीवी को उठाया तो उसको फ्रेक्चर हुआ था। फिर प्लास्टर लगवा कर घर ले गए। शाम को दोस्ती के नाते उन्हें सांत्वना देने हम उनके घर गए, तो देखा कि वे खूब खुश थे। मैंने कहा कि मैं तो अफसोस जताने आया था, लेकिन आप तो मजे ले रहे हैं। वे बोले नासा ! मैं क्या बताऊँ ? बच गए ! मैंने पूछा कि क्यों ? वो बोले कि यह ऐसी जगह होता कि पीछे से बस मार जाती तो ? हम तो बच गए; भगवान का शुक्र है। सो हम तो खुशी मना रहे हैं ! यह एक सोच है।

हम वहीं बैठे थे कि नीचे से एक लेडी कहने आई कि उसने रविवार को एक पाठ रखा है। उसके ग्रह बहुत भारी हैं, टल नहीं रहे। उन्हें पूछा कि क्या हुआ बहनजी ? तो कहा कि हमारे लड़के को खेलते-खेलते फ्रेक्चर हो गया और पति की तबियत भी ठीक नहीं रहती। हमारे ग्रह उतर नहीं रहे। सो हमने बहुत लोगों को बुलाया है।

देखो—परिस्थिति एक जैसी है, लेकिन सोच में फर्क है। उसकी सोच ऐसी कि हमारे ग्रह कैसे उतरेंगे ? उस लेडी को डिप्रेशन हो सकती है, जबकि दूसरी को विचार आया कि हम बच गए ! सोच की बात है सारी। और... हमारी यही सोच पर साहेबजी—गुरुजी चोट पहुँचाते रहते हैं कि हमारी सोच ऐसी बने जो मुक्तों से प्रेम करती रहे, हमें भगवान की ओर ले जाए, अच्छे काम कराए।

हर सभा में गुरुजी कहते हैं कि अपनी सोच को ठीक करो, अपने व्यवहार को ठीक करो। हम जो बताते हैं उस पर अमल करना कब शुरु करोगे ? क्यों नहीं शुरु करते आप ? और सब को उस राह पर चलाते रहते हैं।

मैं पंद्रह साल से साहेब के साथ जुड़ा हुआ हूँ और गुरुजी के साथ भी। तो मेरी यह प्रार्थना कि लंबी उम्र रहे इनकी और हमारी सोच पर ये ऐसे ही कब्जा करे रखें, हमारी सोच को मजबूत पकड़ कर रखें और इसी को सुधारते रहें।

प.भ.वालिया साहेब

...साहेबजी ने एक किताब में लिखा था— 'थिंक पॉझीटिव, रेस्ट विल फॉलो !' मुझे अभी तक इसका मतलब समझ नहीं आया है... इतना समझा हूँ कि यदि थिंकिंग पॉझीटिव हो जाए—हमारा विचार सकारात्मक हो जाए, तो जिंदगी में क्या नहीं हो सकता ? जिनको आज वर्ल्ड फेमस स्वामी बनने का श्रेय मिलता है, वो **स्वामी रामदेवजी महाराज** आज से दस-बारह साल पहले नदी में खड़े होकर बोले थे कि **जब तक साहेबजी मुझे खुद नहीं पहनाएंगे, मैं भगवे कपड़े नहीं पहनूँगा।** तो, कल साहेबजी का परिचय देते हुए मैंने नोएडा में कहा कि **जिन्होंने दीक्षा समारोह में स्वामी रामदेवजी को भगवे कपड़े पहनाए, वो हैं साहेबजी-हमारी नारायणी सेना के फील्ड मार्शल !**

और...पहली मई 1996 को मैं 'रिटायर्ड' नहीं हुआ हूँ। मैं तो रीचार्ज होकर नारायणी सेना में भर्ती हो गया। हाँ, यहाँ भर्ती हुए सिपाही के तौर पर, लेकिन शायद अब एक फीती लग गई है...

साहेबजी के यहाँ और गुरुजी के यहाँ जो काम होता है, एक बार होने के बाद दोबारा नहीं होता है। युनीक ! 'अनुपम मिशन' का मतलब ही 'युनीक' है। आप सब ने साहेबजी को इस ड्रेस में देखा है कभी ? मैंने तो नहीं देखा... दूसरा-अब का निमंत्रण कार्ड तो सब बच्चों ने इसे अपने बॅग में डाल कर रखा हुआ है कि हम अपनी टीचर को बताएंगे कि देखो ये भी एक कहानी होती है—खरगोश और हाथी की कहानी !

...साहेबजी से शुरु में हमने सीखा था—प्रार्थना में इतनी शक्ति है कि आपका कुछ भी रुक नहीं सकता। कई बोलते हैं कि प्रार्थना सब उत्तर नहीं देती। पर ऐसी बात नहीं है; **प्रार्थना ऐसी होती ही नहीं कि जिसका उत्तर ना मिले। उत्तर चाहे 'हाँ' हो या 'ना' हो, पर उत्तर तो मिलता ही मिलता है। ऐसा कभी नहीं होगा कि भगवान प्रार्थना का उत्तर ना दें...** ये ब्रह्मस्वरूप संत साक्षात् जो यहाँ बैठे हैं; इनके सामने **शरणागति की अवस्था में** प्रार्थना करके देखो। मेरा तो कभी काम रुका नहीं है। **ऐसी कोई बात नहीं है जिसका प्रार्थना से हल ना निकले...**

पू. शांतिभाई साहेब (ब्रह्मज्योति)

...बहुत शुभ अवसर है। प.पू. स्वामिजी के सान्निध्य में प.पू. गुरुजी और प.पू. साहेबजी का जन्मदिन–प्रागट्य दिन मनाने के लिए हम सब यहाँ इकट्ठे हुए हैं। साहेबजी और गुरुजी के संबंध की एक बात। जब-जब ये दोनों को मिलते हुए देखा है, कोई अजीब-सा प्रेम दिखाई पड़ता है। **गुरुजी ने** दो साल पहले **साहेबजी को** एक खत **लिखा था**; उसमें लिखा था कि **काकाजी के प्रेम का मैंने अनुभव किया है; काकाजी के साथ आपका जो लगाव था, वो मैंने देखा है और आपको जब मिलता हूँ, तो ऐसा लगता है कि मैं काकाजी को मिल रहा हूँ।**

आज गुरुजी ने बहुत आग्रह किया, तो साहेबजी ने यह पहनावा स्वीकारा ! वर्ना, साहेबजी के स्वभाव में नहीं है, वे नहीं पहनेंगे। चाहे कितना ही अंदर से ऐसा था कि–'नहीं पहनना है, नहीं पहनना है'–लेकिन गुरुजी जो वहाँ खड़े थे, तो वे मना नहीं कर सके। मैं देख रहा था। गुरुजी ने कहा कि– ये पहनना पड़ेगा साहेबजी; साहेबजी क्यों नहीं पहनते ? साहेबजी को ऐसा है कि काकाजी जैसे दिव्य पुरुष का परिवेश हम धारण करें वो कैसे हो सकता है ? हम तो सेवक हैं-उनके दास हैं-चरम सेवक-उनके बेटे हैं। फिर भी गुरुजी ने बहुत आग्रह किया तो गुरुजी को काकाजी का स्वरूप समझ कर वे यह पहन कर यहाँ पधारे हैं।

1973 में काकाजी की विदेश यात्रा में उनके साथ दो सेवक थे। एक प.पू. साहेबजी और दूसरे–हर्षदभाई भट्ट। उधर दस दिन के लिए एक बस में सारा प्रवास करना था। तो कई सप्रवासी काकाजी को पूछते थे कि ये आपकी इतनी सेवा कर रहा है। क्या यह आपका बेटा है ? तो काकाजी ने कहा था-हाँ हमारा बेटा है। यूं काकाजी ने 1973 में अपने बेटे के स्वरूप में सबको बताया कि यह मेरा बेटा है। गुरुजी भी ऐसा वारिसदार 'बेटा' हैं। तो ये दोनों, जो काकाजी के मानस पुत्र–उनका एक साथ जन्म दिन मनाने का हमें जो मौका मिला है, यह हमारा बहुत सद्भाग्य है।

श्री अक्षरपुरुषोत्तम उपासना शताब्दी प्रवर्तन का वर्ष चल रहा है। निन्यान्वे साल हुए–वरताल का मुख्य मंदिर, जहाँ उन्होंने दीक्षा ली थी, वो मंदिर शास्त्रीजी महाराज ने छोड़ा। मंदिर को छोड़ा, लेकिन निकलते समय मंदिर में बैठी हरिकृष्ण महाराज की मूर्ति के सामने खड़े हुए और बोले कि– हे महाराज ! आपके भक्त के साथ–गुणातीत के साथ आपकी युगल उपासना का प्रवर्तन करने के लिए जा रहा हूँ, आप हमारे साथ चलो। ऐसे दिव्य पुरुष जब प्रार्थना करते हैं तो ये भगवान जरुर मान लेते हैं, महाराज जरुर मान लेते हैं। यूं उनके साथ महाराज को लेकर, पाँच साधुओं के साथ वरताल के मंदिर से वे निकले। बाद में केवल छः महीने में '**बोचासण**' में मंदिर की मूर्ति प्रतिष्ठा करी ! कितनी बड़ी ताकत होगी ? इस बात को निन्यान्वे साल हो गए ! ये उपासना की बात समझाने के लिए साहेबजी ने चार शिविर भी करी हैं। **काकाजी बार-बार कहते थे कि भगवान को जैसा मानो, वैसा आप बन जाओगे।** काकाजी ने यह बहुत बार बोला है। भगवान स्वामिनारायण का तो यह वरदान था कि वे कभी परोक्ष होने वाले नहीं हैं। परब्रह्म तत्त्व जो यहाँ प्रगट हुआ है, वह गुणातीत सत्पुरुष द्वारा अखंड रहने वाला है। आज भी वो परब्रह्म तत्त्व तत्स्वरूप सत्पुरुष द्वारा प्रगट हैं। वो प्रतीति हो जाए और उनके साथ ऐसा लगाव हो जाए, उनके साथ ऐसा दिव्यभाव हो जाए, ऐसी महिमा समझ में आ जाए, तो स्वभाव निकल जाता है। स्वभाव टालने के लिए, वासना निर्मूल करने के लिए साहेबजी बताते हैं– **वासना निर्मूल करनी है, तो ऐसे प्रगट सत्पुरुष में मनुष्यभाव ना रखें और दिव्यभाव पूर्ण रखें तो वासना टल जाएगी** और... **यदि आपको स्वभाव टालना है, तो संत के संबंध वाले हर एक भक्त को भगवान का स्वरूप मानो–श्रीजी महाराज का स्वरूप मानो–सहजानंद स्वरूप मानो। उनके साथ ऐसा वर्ताव करोगे तो स्वभाव टल जाएगा।** स्वभाव टालने के लिए–वासना निर्मूल करने के लिए शास्त्रों में बहुत से उपाय बताए हुए हैं, लेकिन बहुत कठिन हैं।

ऐसे दिव्य पुरुष स्वामिजी, अक्षरविहारीस्वामिजी, साहेबजी, गुरुजी–ये योगीजी बापा की, काकाजी-पप्पाजी की हमें भेंट है। कॉलेज में साहेबजी के साथ में हम पढ़ते थे। एक ही क्लास में साथ बैठे हैं। 'वो हमसे बड़े हैं'– यह तो समझ में आता था, लेकिन योगीजी महाराज उनको जो प्यार करते थे, उनको जिस तरह बुलाते-करते थे, वो कोई अलग बात थी।

काकाजी ने हमें यह समझाया– बताया कि **जशभाई साहेब को आप अपने जैसे मत समझो।** यदि उनकी महिमा समझनी है, तो हर रोज एक काम करो। और... मुझे, हर्षदभाई को, पूनमभाई को, अश्विनभाई को–सब को आज्ञा करी कि हर रोज सुबह पाँच बजे उठ कर उनकी रूम में धीरे से जाकर पाँच दंडवत् प्रणाम करो। ये जो दण्डवत् प्रणाम उनको करोगे वो हमें पहुँचेगा, योगीजी महाराज को पहुँचेगा, शास्त्रीजी महाराज को पहुँचेगा, श्रीजी महाराज को पहुँचेगा। **ये महिमा काकाजी ने दृढ़ करवाई।**

तो आज हम ऐसा समझे कि भगवान स्वामिनारायण यहाँ प्रगट हैं। यह समझ कर उनके साथ ऐसा संबंध हो जाएगा, तो जरुर वासना टल जाएगी। और... ये जो भक्त हैं उनको दिव्य मानने से हमारा स्वभाव भी निकल जाएगा और हम दिव्य बन जाएगें। भगवान का मंदिर बनने के लिए–जंगम तीर्थ बनने के लिए यही सही रास्ता है।

तो आज ऐसे दिव्य पुरुषों के जन्मदिन पर स्वामिजी को, काकाजी को, पप्पाजी को, गुरुजी को, साहेबजी को–सभी स्वरूपों को–प्रमुखस्वामी महाराज को, महंतस्वामिजी को भी–ऐसे जो गुणातीत पुरुष हैं उन सब के चरणों में प्रार्थना करते हैं कि–

आप आते हैं–संबंध देने के लिए, संबंध तो हो गया ! आप में दिव्यभाव भी है, पूर्ण दिव्यभाव कराने की हमारी प्रार्थना है। आपके साथ ऐसा अटूट संबंध हो जाए... आप ही हमारी आत्मा हैं और आपको प्रसन्न करने के लिए हर पल हमें बितानी है यह सूझ–समझ दें और ऐसे आशीर्वाद भी दें...

पू. वशीभाई

...आज इतने बड़े आनंद का उत्सव है। महाराज गढडा में आए उसको दो सौ साल हुआ। अक्षरपुरुषोत्तम के लिए शास्त्रीजी महाराज को 'वड़ताल' से बाहर निकले सौ साल हुए और पू. सोनाबा की बर्थ सेन्टिनरी सेलिब्रेशन का वर्ष भी है। ये सब माहौल में–दिव्य वातावरण में उपस्थित रहना अक्षरधाम की सुख, शांति, आनंद का अनुभव कराता है और... गुरुजी उसमें कुछ नए-नए क्रीएटिव–इनोवेटिव आईडियाज़ लेकर, हम सबको सरप्राईज़ देते रहते हैं। अभी **'ध्रुव भगत'** को 'यज्ञप्रियस्वामी' की दीक्षा दी गई वो भी ऐसी ही सरप्राईज़ है। **एकदम प्यॉर, इनोसेन्ट बालक जैसे निर्दोष संत !**

आज से पचास साल पहले 1954-1955 में 'दिलीप धनप्रसाद महेता' नाम का एक लड़का योगीजी महाराज के दर्शन करने गया था। काकाजी वहाँ–सुंदराबाई हॉल में प्रवचन दे रहे थे, काकाजी से मानो एट फर्स्ट साईट लव हो गया। पचास साल की मंज़िल काटते हुए मुकुंदजीवनस्वामी में आज हमें 'गुरुजी' का दर्शन होता है। एक रहनी-करनी में पचास साल रहना बहुत मुश्किल है... और गुरुजी तो– **ही लाईक्स एवरी थिंग मॉर्डन !**

...गुरुजी ऊपर से लगते हैं कि बड़े आऊटवर्ड हैं, फोर्वड थिंकर हैं; लेकिन दिल से बड़े साधु हैं, बड़े भजनिक हैं और अपने गुरु के प्रति–काकाजी के प्रति इतना ही प्रेम है और वो प्रेम वे सब को बाँटते रहते हैं... एक **स्थावर मंदिर करना आसान है;** चलो भई ईंट–पत्थर लगा दिया और मंदिर कर दिया । **लेकिन एक इंसान को तैयार करना, इंसान में से भक्त बनाना, भक्त में से एकांतिक बनाना बहुत मुश्किल है।** लेकिन **गुरुजी अंदरूनी भजन से, प्यार से ऐसे-ऐसे भक्त तैयार करते हैं**–खुद ही प्रसंग योजित करके भजन कराते हैं। अभी एक प्रसंग सुना कि एक बहन परछाई–जो यहाँ भगवान भजती है; उसे कोई बीमारी नहीं–कुछ नहीं, पर ऑल ऑफ ए सडन ख्याल पड़ा कि उसकी तो दोनों किडनी फेइल हैं। आपको कुछ नहीं हो और अचानक ऐसा हो जाए तो शून्यमनस्क हो जाते हैं। लेकिन **गुरुजी और यहाँ का समाज–दोनों ऐसे जुड़े हैं कि गुरुजी समाज को संभालते हैं और समाज गुरुजी की ओर देखता है कि गुरुजी को क्या लगेगा–उसको क्या होगा ? उसके लिए हम क्या करें ?** तो दो दिन आठ-आठ घंटे के भजन का प्रोग्राम किया। गुरुजी ने यह क्या किया है ? वजह का ख्याल परिणाम से आता है। तो दो दिन के भजन के फलस्वरूप मानो भगवान ने सामने से उत्तर भेजा !

अमदावाद में एक बहन है, वो किडनी स्पेश्यिालिस्ट है। वो डॉ. बहन रात को पौने ग्यारह बजे अमदावाद से दिल्ली परछाई को देखने आई थी। तब यहाँ करीब पचास हरिभक्त थे और सब के सब बोले कि मेरी किडनी दे दो। वो डॉ. बहन सरप्राईज़ हो गई कि यह क्या है ? इन लोग में इतना क्या है कि सब लोग किडनी देने को तैयार हैं ! किडनी देने को सगा भाई भी तैयार नहीं होता है। यहाँ सब तैयार ? वो बहन खुश हो गई कि आपका समाज कैसा है ? और वो लड़की की जो मधर–वो बहुत कम्पोज़-बड़ी कूल ! वर्ना, नॉर्मली मधर को तो फील होता है ना कि क्या होगा ? लेकिन **गुरुजी की रीति कि–पहले भजन; एण्ड धेन टेईक धी एक्शन। तो, सामने से (ऑटोमॅटीक) सब एरेन्जमेन्ट हो गया।** काकाजी को तो बीमारी पंसद नहीं थी, तो आज महापूजा में भी सभी स्वरूपों के चरणों में प्रार्थना करी है कि ये जो भगवान भजते हैं, इनको ऐसी बाधा ना आए... सुगम मार्ग निकाल करके इसे एकदम अच्छा कर दें। वो डायालेसिस के लिए हॉस्पिटल गई, तो और बहनें भी साथ में थीं। वहाँ डायालेसिस वाला पूछता था कि हु इज़ धी पेशन्ट ? सब इतने फ्रेश दिखते हैं, तो आप में से पेशन्ट कौन है ? नॉरमली किडनी फेल होती है, तो आदमी मेन्टली खत्म हो जाता है–जैसे नासा साहेब ने बताया कि 'एटीट्यूडनली' बीमार हो जाता है। लेकिन वो इतनी फ्रेश, इतनी शांत ! अभी भी देखो, वो कुछ बोलती नहीं है। उसके चेहरे पर कोई चिंता नहीं है, प्रॉब्लम का टेन्शन नहीं है कि अरे ! क्या हो गया ? मैं ही आपको मिला ? मुझे ही इतनी बीमारी देनी थी ? ऐसी कोई कम्प्लेईन्ट नहीं, कोई भाव नहीं ! पर, **यह एटीट्यूड खाली बोलने से नहीं, अंदरूनी भजन-अंदरूनी प्रार्थना से मिलती है। ऐसे भक्त को तैयार करना, वो कितनी बड़ी बात है ? ये है–गुरुजी की भक्तों के प्रति की कॅयर ! ही इझ ए पर्सोनिफाईड कॅयर !**

मुंबई से **प्राची शाह** आए हैं। शी इझ इन टेलीविज़न-फिल्म वर्ल्ड ! पर गुरुजी की भावना कैसी है कि वो बोलते हैं कि यह कोई चेतना डिवाईन है। कॅयर के अलावा, अनधर थिंग इझ रिलेशन ! **जिसके साथ गुरुजी रिलेशन बांधते हैं, उसको सारधार निभाते हैं-पार उतारते हैं। उसको बीच में नहीं छोड़ते हैं।** डॉ. मांडके ने गुरुजी का और दीदी का ऑपरेशन किया था, तो अल्का बहन हैं–उनकी वाईफ। उसका फोन आया कि मेरी बेटी की शादी है। गुरुजी तो जा नहीं सकते, तो आनंदी दीदी को भेजा ! दीदी वहाँ गए, तो हम भी वहाँ गए थे। प्राची बहन वहाँ मिल गए। दीदी ने उनको सब बातें करी, तो वो भी आज आए हैं।

कहने का मतलब यह है कि **भगवान या भगवान के संत क्या करते हैं कि जो भी जीव उनके पास आता है, भगवान का संबंध करा देते हैं।** उस समय महाराज ने घोड़ा ग्रहण किया, ताकि लोग उनकी ओर देखें और उनका कल्याण हो जाए–भगवान के मार्ग पर उसकी लॉटरी लग जाए। मल्कानी विल एग्री विथ मी। 'कॅची' आईडियाझ इन एडवर्टाईझमेन्ट वर्ल्ड ! महाराज ऐसे 'कॅची' आईडियाझ पकड़ते थे, जैसे आज गुरुजी ने 'कॅची' आईडिया पकड़ा। साहेब को यह पहनावे में देखेंगे तो, नो बडी–मैं तो शांतिभाई को बोल रहा था कि वहाँ अश्विनभाई और भक्त लोग तो मानेंगे ही नहीं कि कौन है ? तो आज हमारी भी लॉटरी लग गई है। महाराज का–शास्त्रीजी महाराज का शुभ दिन, साहेब का प्रागट्य दिन, गुरुजी का प्रागट्य दिन–स्वामिजी यहाँ साक्षात् विराजमान ! इतने स्वरूप विराजमान !! हम सब तो खूब भाग्यशाली, खूब भाग्यशाली, खूब भाग्यशाली हैं। कहते हैं ना कि **कल्पवृक्ष के नीचे बैठे कर जो भी संकल्प करो, वो सिद्ध हो जाता है।** और... **आज तो कल्पवृक्ष तैयार करने वाले ऐसे संत बैठे हैं–ऐसे भगवान के स्वरूप बैठे हैं।**

...मानवस्वरूप में भगवान को पहचानना बहुत मुश्किल बात है क्योंकि हमारे जैसे ही खाते हैं, पीते हैं, चलते हैं। **हम भुलावे में पड़ जाते हैं कि ये हमारे जैसे ही हैं।** लेकिन **वो टोटल डिफरन्ट हैं; 'विजातिय' बोलते हैं उनको।** तो जैसे कि शांतिभाई ने बताया – ऐसी प्रार्थना करनी कि हे महाराज हमें आपका रंग दे दो। कल होली थी; होली में रंग देते हैं। **गुरुजी ने सब को चंदन लगाया। वो चंदन नहीं लगाया, बल्कि अपना रंग दिया। साधुता का रंग- प्रेम का रंग-आनंद का रंग !**

तो काकाजी महाराज आज बहुत खुश होते होंगे कि दिल्ली में गुणातीत समाज के हमारे हरिभक्त आएं–संतों आएं। **ऐसा सेलिब्रेशन हो यह भी बहुत बड़ी जबरदस्त घटना है।** एक्च्यूअली घटना हमारे सामने घटती है, लेकिन **हम देखते हुए भी 'ब्लाईन्ड' हैं।** योगीजी महाराज बोलते थे कि अंधा देखता हो जाए। **'अंधा देखता हो जाए'–उसका मतलब यह नहीं है कि अंधे को आँख आ जाए; बट यू केन गेट ए डिफरन्ट व्यू पोईन्ट। यू सी धी थिंग्स डिफरन्ट्ली। काकाजी का विज़न था– जो योगीजी महाराज का विज़न था कि हम हिलमिल कर ऐसा आनंद करें।** तो अक्षरपुरुषोत्तम उपासना प्रवर्तन शताब्दी हम दिसंबर की आख़िर में हिलमिल कर मनाएं और खूब-खूब आनंद करें और ब्रह्मरूप होकर भगवान का काम करें–ऐसी प्रार्थना !

प.भ. ओ.पी.अग्रवालजी (मुंबई)

...आज कैसा शुभ दिन ! दो महान विभूतियों का प्रागट्य दिन ! वो भी एक साथ हम यहाँ मना रहे हैं। मैं गुरुजी को पहली बार 1993में-प.पू. काकाजी के अमृतपर्व पर पवई में मिला था। मैंने देखा है कि **उनकी हर क्रिया में–कोई भी काम कैसे भी करते हों उसमें काकाजी का ही दर्शन !** काकाजी के लिए ही उनका सारा जीवन ! मैंने तो काकाजी का स्थूल रूप से दर्शन नहीं किया था, लेकिन गुरुजी के व्यवहार से, वर्तन से, सारी क्रियाओं से हमें ख्याल पड़ता है कि काकाजी ऐसे होंगे। मन में पू. काकाजी की एक खूब जीवंत प्रतिमा बनती जाती थी और **आज हम सब लोग खूब भाग्यशाली हैं कि गुरुजी ने हम को काकाजी का स्थूल रूप में भी प.पू. साहेब के इस पहनावे के अंदर दर्शन करा दिया है। खूब-खूब धन्यवाद है गुरुजी को कि हम सब को साहेब के रूप में काकाजी बिलकुल जीवंत यहाँ बैठे हुए दिखाई दे रहे हैं।** गुरुजी का परिश्रम भी कितना ? उनकी क्या सोच ? एक-एक चीज कि– पू. काकाजी क्या-क्या पहनते थे, कैसे पहनते थे, कौन-सी कंपनी का पहनते थे ? उनको ब्रांड तक याद है कि काकाजी 'फिनले' की धोती पहनते थे। मुझे गुरुजी का फोन आया कि मुंबई से 'फिनले' की धोती लानी है। मैं बाजार में पूछने गया तो सभी ने कहा कि 'फिनले' मिल को बंद हुए दस साल हो गए ! अभी 'फिनले' की धोती कहाँ से लाएं ? मैंने गुरुजी को कह भी दिया कि कितने साल पहले की बात है यह ? अभी तो सब बदल गया है ! तो गुरुजी कहने लगे कि मैं भी तो साठ साल का बैठा हूँ !

मेरा यह कहना है कि काकाजी की एक-एक चीज उनके रोम-रोम में बसी हुई है। पर्टीक्यूलर ब्रांड का सिल्क का कुर्ता पहनते थे वे, वो सब ख्याल है-याद है।

आज जब **'पू. यज्ञप्रियस्वामी'** को भागवती दीक्षा दी गई, तो इतने जवान साधु को देख कर आँखों में आँसू आ रहे थे। ख़ुशी के आँसू थे कि गुरुजी ने कैसी रचना करी है कि आज हमें इतना आनंद मिलता है। पूर्व के कोई संस्कार होंगे हमारे, जिसकी वजह से हमें गुरुजी की कृपा मिली और ऐसा दर्शन मिल रहा है। मैं ब्रह्मविद्या में पढ़ रहा था कि **'पूर्व के संस्कार' क्या ? आज जो हुआ है वो आने वाले कल का 'पूर्व का संस्कार' हो जाएगा।** तो **आज हमें ऐसे संत मिले हैं, ऐसे गुरुजी का जो संबंध हुआ, स्वामिजी का-साहेब का संबंध हुआ ये हमारा एक संस्कार बन गया।** ऐसे पूर्व के संस्कार के कारण हम यह आनंद कर पा रहे हैं।

3 दिसंबर को मेरे पिताजी अक्षरनिवासी हो गए थे। मैंने सुबह पाँच बजे गुरुजी को फोन किया कि ऐसे हो गया है, सो नौ बजे की फ्लाईट से मैं दिल्ली पहुँचूंगा। गुरुजी ने तुरंत कहा कि पालम से आप सीधे कोसी मत निकल जाना, थोड़ी देर रुकना। मुझे एकदम ख्याल पड़ा और लगा कि गुरुजी शायद वहाँ आना चाह रहे हैं। तो मैंने प्रार्थना करी कि गुरुजी–खूब ठंड है, आप वहीं मंदिर में रहना, मत आना। पर, गुरुजी मेरे से पहले वहाँ पहुँचे हुए थे ! इसे क्या समझें ? इस बार के निमंत्रण कार्ड में लिखा हुआ है ना– **'फाधरली फिगर' ! जिस रूप में उनको देखो, उस रूप में वे दिखाई देते हैं।** मेरे मन में ऐसा था कि मेरे पिताजी काफी समय से मेरे साथ नहीं रहे। गुरुजी ने इमीडिएट्ली-स्पोन्टेनियस्ली अभिषेक को कहा कि कंठी दे और मुझे कहा कि यह पिताजी के पार्थिव शरीर को पहना देना। मेरे मन को एकदम शांति

हो गई, तसल्ली हो गई। **हमारी कोई भी क्रिया में, कोई भी एक्टीविटी में हर पल हमें वे सही दिशा देते हैं और आगे-आगे काम कराते रहते हैं।**

31 दिसंबर की रात को गुरुजी ने नए साल के लिए सब को एक आशीर्वाद दिया कि ये **नया साल आप सब हरिभक्तों के लिए खूब अच्छा रहेगा।** पर जैसे कि आजकल जहाँ ऑफर हो, वहाँ स्टीकर पर लिखा रहता है कि कन्डीशन्स एप्लाई; तो इतनी बड़ी चीज के लिए यहाँ **छोटी-सी कन्डीशन** भी लगाई **कि बिना नागा किए रोज दस मिनिट धुन अचूक करना और दस मिनिट की धुन उसी दिन तो गुरुजी ने करा भी दी थी !** मैंने सोच लिया कि जब गुरुजी कह रहे हैं तो क्यों ना करें ? आज मैं देखता हूँ कि डेईली धॅर इज ए सीरिझ ऑफ एक्सपीरियन्सीझ और हर दिन कुछ ना कुछ अच्छा ही अच्छा होता है। ऐसी उनकी हम सब पर कृपा है। यूं गुरुजी सिखाते हैं कि प्रभु का नाम लेकर ही सब काम करें। यही बात वे भी करते हैं।

मैंने पहले भी एक-दो बार बात करी थी कि गुरुजी से हम जब भी अपनी प्रॉब्लम की बात करें, तो वे बोलेंगे कि काकाजी को याद करके दस-पाँच मिनिट धुन करना-भजन करना। वो ही उनका एक सॉल्यूशन ! और... उसमें से सारा काम बनता भी चला जाता है।

योगीजी महाराज की बोधकथाओं में एक प्रसंग लिखा हुआ था कि एक संत किसी खेत से गुजर रहे थे। वहाँ फसल बढ़ी-खड़ी लहरा रही थी। संत बोले कि प्रभु की कैसी कृपा है कि इतनी बढ़िया फसल आई है। तो वहाँ का किसान बोल उठा– नहीं यह तो मैंने जो मेहनत करी है, दिन-रात एक करा है तब यह परिणाम आया है। कुछ दिन बाद संत वहीं से वापिस गुजर रहे थे। उन्होंने देखा कि फसल तो सारी मर चुकी थी, उसे कीड़ा लग चुका था। वो किसान वहीं खड़ा था। उन्होंने पूछा कि क्या हो गया यह फसल को ? तो वह किसान ने कहा कि भगवान ने मेरा यह सारा नष्ट कर दिया। देखो ! **अच्छा हुआ तो 'मैंने' और खराब हुआ वो भगवान का दोष !**

भगवान का आसरा-सहारा हम नहीं मानते, इसीलिए हमें ऐसे दुःख हैं। कॉमन-लॉजिकल बात है कि परिवार में एक फाधर भी देश-विदेश कहीं भी जाता है, तो वह अपने परिवार की हर तरह की खबर रखता है। ऐसे संत जिन्होंने प्रभु को धारण किया हुआ है वे हमारा ध्यान नहीं रखेंगे क्या ? प्रभु का आसरा लेकर यदि हम चलें, तो ये चीज हमें खूब समझ में आ जाएगी। प्रॉफेशन से मैं चार्टर्ड एकाउंटन्ट हूँ। लेकिन **जो मैंने जिंदगीभर में नहीं देखा-समझा होगा, वो सही जीवन जीने का तरीका मुझे गुरुजी के चरणों में, गुरुजी के सान्निध्य में समझ में आया** और... उससे मेरा जीवन सब कुछ बदल गया !

सो, कोटि-कोटि धन्यवाद है काकाजी को, जिन्होंने हमें गुरुजी का ऐसा संबंध दिया। जैसे मैं हमेशा कहता हूँ– एक और भी खास सौभाग्य मुझे मिला हुआ है कि **दीदी के साथ का भी हमारा एक दिव्य संबंध गुरुजी ने बनाया।** इस तरह हमें खूब-खूब आनंद दिया है। सो, गुरुजी के-साहेब के प्रागट्योत्सव पर भगवान के चरणों में, काकाजी के चरणों में, स्वामिजी के चरणों में, साहेब के चरणों में, गुरुजी के चरणों में प्रार्थना करते हैं कि वो हमारा यह संबंध और हमारे ऊपर जो कृपा बनाई हुई है, वो दिन-प्रतिदिन खूब बढ़ता जाए, खूब गहरा होता जाए...

प.पू. गुरुजी

सबसे पहले तो–स्वामिजी, साहेब जैसों को हम से कुछ ऐसा लगाव है कि हमारे एक कहने पर वो कभी मना नहीं करते हैं और यहाँ आ ही जाते हैं। इसलिए खूब-खूब, कोटि-कोटि वंदन दोनों को। जब स्वामिजी को मैंने फोन करा था, तो कईयों ने मुझे पूछा था कि क्या स्वामिजी आएंगे ? उनकी तबियत ठीक नहीं है। तब भी मैंने कहा था कि मैंने कहा है तो आ ही जाएंगे। मैं भी हमेशा यह आग्रह रखता हूँ। और... वो इसलिए कि–

साहेब और स्वामिजी एक बात बहुत अच्छी तरह जानते हैं कि एक कारोबार लेकर–एक समाज लेकर जब चलते हैं, साथ में रहते हैं तो कई ऐसे प्रसंग भी बनते रहते हैं। और मैं... बहुत सेन्सिटिव हूँ यह भी आपको पता है। कई प्रसंगों में मैं डूब

भी जाता हूँ। लेकिन जैसे साहेब आ जाते हैं, स्वामिजी आ जाते हैं, कोई बात कर जाते हैं, हाथ फिरा जाते हैं, गले लगा जाते हैं, तब **'श्री दिनकर जोशी'** के शब्द में कहें तो–ऐसा लगता है कि **'विश्व वात्सल्य'** का स्पर्श मिल गया ! इसलिए **ऐसी हूँफ देने आप अचूक आते ही रहना।**

देखो **आप सभी चार बजे से यहाँ बैठे हुए हैं। लगभग दस बजने को आए। लेकिन कोई 'बोर' नहीं हुआ !** मैंने दो-तीन जनों को पुछवाया भी कि आप 'बोर' तो नहीं हो गए ना ? वर्ना चाय भिजवाऊँ ! स्वामिजी जानते हैं कि यहाँ बैठे-बैठे यह ऐसा कुछ तो करता ही रहता होगा।

सभाएं लंबी चलें और हम बैठे भी रहें, पर कोई बोर नहीं हुआ है, इसका कारण यह है कि–**'ब्रह्मसूत्र'** में एक सूत्र है– **आनंदोब्रह्म ! 'ब्रह्म' का एक विशिष्ट लक्षण है कि वो आनंद प्रगटाता है।** तो **जो ब्रह्मस्वरूप संत यहाँ हाज़िर हैं और इनकी महिमा की हम बातें करते हैं, इनका सिमरन करते हैं, इनके अनुसंधान से हम रहते हैं, उसका आनंद हम महसूस करते हैं।**

आज खास साहेब का और स्वामिजी का आशीर्वाद लेना है। साहेब की जयंती है। मैं जो बात करुं आप शायद ना भी समझ पाओ, लेकिन समझोगे तो ख्याल पड़ जाएगा कि साहेब क्या व्यक्ति हैं। साहेब का एक छोटा-सा प्रसंग मैंने पढ़ा है। साहेब फॉरेन गए थे। वहाँ साहेब की बातें, साहेब का व्यक्तित्व, साहेब की रहन-सहन, बोलचाल से आकर्षित होकर एक नए चाहक ने पूछा कि– साहेब आप मेरे घर पर आओगे–पधरामनी करोगे ? और... साहेब हाँ–ना करें उससे पहले उसने पूछा कि साहेब आप पधरामनी का क्या लेते हो ? दो सौ डॉलर ? पाँच सौ डॉलर ? **साहेब ने एकदम कह दिया कि पधरामनी की 'फी' नहीं होती, तुम्हारा 'प्रेम' लेने मैं आता हूँ।**

इतने से बात नहीं रुकी। वो भाई साहेब नए थे, इन्होंने एकदम कहा कि दूसरे संत लोग आते हैं, वो तो पधरामनी की दो सौ–पाँच सौ डॉलर 'फी' माँगते हैं। **साहेब भोले-भाले नहीं हैं। एज्यूकेटॅड हैं, इन्टलॅक्चयूअल हैं।** बात को समझ गए कि वो क्या कह रहा था। साहेब ने एकदम दूसरी ही बात करी कि आप डॉक्टर को दिखाने जाते हो, तो डॉक्टर कोई 'फीझ' लेता है कि नहीं ?

उसने कहा–हाँ।

कितनी लेता है ?

पचास–साठ डॉलर !

और पूछा कि विज़िट पर आया हो तो ?

तो कहे–अमेरिका में विज़िट पर डॉक्टर आता ही नहीं।

तब साहेब ने एकदम कहा कि–देखो, **देह का थोड़ा-सा दर्द टेम्परारी भी हटाने के लिए अगर डॉक्टर को 'फी' देनी पड़ती है, तो ऐसे संत हमारे घर पर आएं जिससे कि हमारे जन्म-जन्म का रोग टल जाए, तो दो सौ-पाँच सौ डॉलर तुम्हें ज्यादा लगते हैं ?**

बेशक, ये जवाब यूं बड़ा लॉजीकल है ही। पर उसने तो एक **तुलनात्मक भाव में पूछा था।** मैं दो दिन तक यह विचार में रहा कि साहेब की जगह अगर मैं होता, तो **अपनी एक अच्छाईपेशी रखने के लिए यह कहता–हम तो योगीजी महाराज की रीत से चलते हैं, काकाजी की रीत से चलते हैं; हम ऐसा सौदा नहीं करते।** हम ऐसा करा भी करते हैं। कई तो बोलते हैं कि हम तो ज़रा अलग हैं। मतलब वो जो कर रहे हैं, वो गलत हैं और वह हम इन्डायरेक्टली जस्टीफाई कर देते हैं, सर्टीफाई कर देते हैं। असली साधु ऐसा कभी नहीं करेगा।

तुरंत पलट कर उसे यूं पूछना और उसकी वो बात को ही काट देना–वो साहेब की साधुता, असली संत हृदय है।

और... सभी खूब ध्यान से सुन लें कि **वो कोई पराए थे, इसलिए साहेब ने अपना बड़प्पन दिखाने के लिए यूं बात करी ऐसा भी नहीं है।** मैं कई बार ब्रह्मज्योति जाता हूँ, साहेब के साथ बैठता भी हूँ। कई बातें डिस्कस भी होती हैं।

पर मैंने देखा है कि **हमारे ग्रुप में भी वे कुछ अच्छी तरह जा रहे हैं और दूसरे कुछ गलत जा रहे हैं–ऐसा इशारा भी मुझे आज तक नहीं मिला।** बल्कि कई बार ऐसा कहा है कि–

गुरुजी, हम हमउम्र हैं इसलिए आपस में दिल खोलने बात करें, वो बात अलग है। लेकिन दूसरों से हमें क्यों बात करनी ? इसमें पड़ने जैसा ही नहीं है। हम हमारा टाईम ना बिगाड़ें।

आज जब साहेब की जयंती मना रहे हैं, तो साहेब के जीवन से भले और कुछ ना सीखें पर **यह एक प्रसंग खूब याद रखें कि साहेब ने उसको क्या जवाब दिया ?**

और... साहेब आज के दिन ऐसे आशीर्वाद दे जाएं, स्वामिजी भी हमें ऐसा बुद्धियोग दे जाएं कि ऐसे पॉझीटिव थिंकिग पर हम हमेशा चलते रहें।

प.पू. साहेबजी

बहुत आनंद का दिन है। गुरुजी के प्रागट्य दिन निमित्त हम सब को बहुत अच्छा लाभ मिला। दोपहर को महापूजा हुई; अभी स्वामिजी का, गुरुजी का आशीर्वाद मिला। महेन्द्र कपूर और रोहन कपूर भाई ने बहुत अच्छे भजन सुनाए। हम सब भक्ति रस में तरबोर बन गए।

गुरुजी ने बताया कि कोई बोर नहीं हुआ। **पूरा लाईवली एटमोस्फियर चल रहा है, क्योंकि–ऐसे ब्रह्मस्वरूप संत के सान्निध्य में भीतर से एक आनंद ही प्रगट होता है।**

लेकिन मेरी एक प्रार्थना है। **गुरुजी की जन्मजयंती मनाने मैं हर साल आऊँगा।** इधर आता हूँ–गुरुजी के प्रागट्य पर्व का आनंद लेने के लिए, लेकिन आज मेरा आनंद थोड़ा कम हो गया। साथ में मेरा जन्म दिन भी डाल दिया ! तो गुरुजी, संत लोग, पू. मल्कानी अंकल, सब बहन लोग और पूरे समाज को मैं प्रार्थना करता हूँ कि मैं तो आनंद लेने के लिए उत्सव में सहभागी होना चाहता हूँ। तो, **मैं आऊँगा जरुर, लेकिन ऐसा मिक्सअप मत करना।** गुरुजी का प्रागट्य मिन्स गुरुजी का प्रागट्य दिन ही मनाएंगे। ऐसी मेरी प्रार्थना आप सब को है।

ऐसे साधु-संतों की हमें भेंट मिली वो प्रभु की बहुत अद्‌भुत कृपा है। **बॅकग्राऊंड में जो ये मूर्तियाँ बनाई हैं, इसमें स्वामिनारायण भगवान के पूरे कार्य का निर्देश दिया गया है।** नॉर्थ इंडिया में प्रगट होकर स्वामिनारायण भगवान गुजरात में आए, दादाखाचर के दरबार में रहे और मानवजीवन को सुखी करने के लिए जो काम किया है, जो बातें बताई हैं वो जीवन में एक्शन में आए–वर्तन में आए उसके लिए सौ साल पहले शास्त्रीजी महाराज ने अक्षरपुरुषोत्तम की उपासना द्वारा जो कार्य का प्रारंभ किया, वो कार्य देख कर हम सब को बहुत प्रसन्नता होती है। **वो कार्य है–'साकार प्रगट की उपासना' का।**

पू. नासाजी ने बात बताई कि **साधु रूप में भगवान प्रगट है, वो बात मानने के लिए लोग तैयार ही नहीं होते हैं।** राम को मानेंगे, कृष्ण को मानेंगे, महावीर-बुद्ध को मानेंगे, भगवान स्वामिनारायण को मानेंगे। पर वो ही राम मानवरूप में प्रगट हैं, वो ही कृष्ण मानवरूप में हैं, वो ही स्वामिनारायण भगवान मानवरूप में हैं, तो वो हम स्वीकार नहीं करेंगे। इसलिए कवियों ने गाया भी है कि **प्रगट को माने बिना, प्रगट के साथ जुड़े बिना मानव कभी भी परम सुख, परम शांति, परम आनंद का भोक्ता नहीं बन सकेगा।** पर, वो भगवान प्रगट किधर है ? श्री कृष्ण परमात्मा ने भी गीता में वरदान दिया है कि जब यह आत्मा को मानव देह मिलता है, तब **भारत वर्ष में भगवान स्वयं या साधु रूप में जरुर प्रगट होते हैं, होते हैं, होते हैं। उनकी जब पहचान होती है, तभी वो मानवी 'भक्त' बनता है।** भगवान की पहचान के बिना ऐसे 'भक्त' नहीं बनते हैं। **स्वामिनारायण भगवान ने यह वरदान दोहराया कि हम इस ब्रह्मांड में आए हैं, तो हम साधु के रूप में अखंड रहेंगे–जाएंगे नहीं। ऐसे साधु की जो बात बताई वह – 'गुणातीत संत'।**

स्वामिनारायण भगवान ने बताया कि मैंने सात वर्ष ये भारत वर्ष की यात्रा करी। हम यात्रा पर निकलते हैं, तो घूमने के लिए निकलते हैं। स्वामिनारायण भगवान ऐसे घूमने के लिए नहीं निकले थे। वो सभी तीर्थों में गए। मानव रूप में सुखी

होने के लिए साधु संन्यासी जो साधना कर रहे थे और आत्मा के कल्याण के लिए जो सिद्धांत प्रचलित है–द्वैत-अद्वैत, विशिष्ट अद्वैत–इन सभी का उन्होंने स्टडी किया। उनके बारे में सोचा, उनके बारे में बातें करी, साधकों के साथ आश्रमों में रहे, साधु-संतों के साथ चर्चा करी। उनमें से जो अच्छा था, वो लेकर उन्होंने बोला कि **कलिकाल में आत्मा के कल्याण के लिए 'भक्ति मार्ग' श्रेष्ठ मार्ग है और ये भक्ति मार्ग पर चलने के लिए 'विशिष्ट–अद्वैत' सिद्धांत उन्होंने स्वीकार किया।** 'विशिष्ट अद्वैत'–भगवान के साथ जुड़ जाना ये अद्वैत है, लेकिन ये साधु-संत भगवान के साथ जुड़े हुए हैं फिर भी वे भगवान के दास हैं। विशिष्ट रूप से वो अद्वैत बन गए हैं। सच्चे साधु में ऐसा वर्तन दिखाई पड़ेगा। वर्ना सब ऐश्वर्य संपन्न होते हैं, चमत्कार दिखाते हैं, (लौकिक) काम भी होते हैं। भारत वर्ष में ऐसे तपस्वी, सिद्धिवान कई महात्मा लोग हैं। लेकिन वे खुद भगवान बन जाते हैं, फिर उनमें कुछ नहीं निकलता।

जिसके द्वारा भगवान प्रगट हों, वो तो बोलता है कि मैं कुछ नहीं करता, सब भगवान करते हैं। भगवान जैसा ऐश्वर्य पाए, तो भी वे भगवान के दास हैं। वो विशिष्ट रूप से भगवान के साथ अद्वैत बन गए हैं। **ऐसे साधु गुणातीतानंदस्वामी– जिन्हें हम 'अक्षर' बोलते हैं, उनके द्वारा पुरुषोत्तम नारायण स्वयं प्रगट रहते हैं।** अर्जुन नर से नारायण बन गया क्योंकि कृष्ण भगवान के साथ जुड़ गया ! अर्जुन-अर्जुन नहीं रहा नारायण स्वरूप बन गया। गुणातीत भगवान के साथ जुड़े हुए थे, वो नारायण-पुरुषोत्तम स्वरूप बन गए। तो **ऐसे 'अक्षर रूप' साधु द्वारा भगवान हमारे जैसे साकार हैं और प्रगट हैं। उनके साथ जुड़े बिना, उनके साथ लगाव करे बिना, उनके साथ प्रेम रखे बिना आत्मा जन्म-मरण के चक्कर से कभी नहीं निकलेगी। वो बात स्थापित करने के लिए शास्त्रीजी महाराज, योगीजी महाराज ने सौ-सौ साल से कठिनाई झेल कर हम सब को ऐसे साधु की भेंट दी है।** हम आज उनको प्रभु का स्वरूप बोल सकते हैं। सौ साल पहले ऐसा नहीं था-मार पड़ती थी।

समाज में जब नई बात आती है, समाज में जब नई राह दिखाने वाला आता है, तो उनको हार नहीं मिलता है, उनको जूता मिलता है। शास्त्रीजी महाराज, योगीजी महाराज ने ऐसा सह करके हम सब को ऐसे साधु संतों की भेंट दी। **काकाजी के साथ, योगीजी महाराज के साथ, स्वामिजी के साथ गुरुजी का अद्वैत है, वे एकरूप बन गए हैं। लेकिन विशेषता उनकी यह है कि वो उनके 'दास' के रूप में काम करते हैं।** उनको सदा ही सेवकभाव रहा है। ऐसा नहीं मिलेगा। **जब लाखों शिष्य हो जाते हैं, जब ऐश्वर्य आ जाता है तब अपने आप को कुछ समझने लगते हैं।** दूसरों की सेवा करने की बात छूट जाती है। लाखों लोग उनको कितना भी मानें या लाखों लोग चले जाएं, हार पहनाओ या जूता दो, **लेकिन ऐसे गुणातीत साधु अपने मुकाम से कभी चलित नहीं होते** और प्रभु की भक्ति में से कोई उनको छुड़ा नहीं सकता। और **विशिष्ट रूप से–दासत्व रूप से प्रभु की भक्ति करते हैं।**

दो दिन पहले अध्यात्मानंदस्वामिजी हमारे आश्रम में आए थे। साधकों की सभा के बाद हम नाश्ता कर रहे थे। शिवानंद आश्रम में वे बहुत बड़े स्वामी हैं और वेस्टर्न इंडिया का एवं विदेश का पूरा कारोबार चलाते हैं। आई.ए.एस.–आई.आर.एस. के लिए योग, वेदांत, उपनिषद्, श्रीमद् भागवत् पर देहरादून-मसूरी की एकादमी में उनकी क्लासिस में खूब अच्छे लेक्चर देते हैं, बहुत बड़े संत हैं। हमारे साथ बैठे बातचीत करते थे। लास्ट ईयर आए थे गुरुजी के प्रागट्य दिन पर। संत निज़ामुद्दीन का दृष्टांत दिया था उन्होंने। मैंने कहा कि कल मैं जा रहा हूँ। उन्होंने याद किया कि लास्ट ईयर मैं गुरुजी के प्रागट्य पर्व पर वहाँ था। फिर उन्होंने मुझे बताया कि **गुरुजी की विशिष्टता** क्या है **कि** वो इतने बड़े संत हैं, इतने शिष्यगण उनके पास हैं, लेकिन **उनकी एक ही ख़्वाईश रही है काकाजी को पहचानो, योगीजी महाराज को पहचानो, स्वामिनारायण भगवान को पहचानो।**

मुझे ये काकाजी का ड्रेस पहनाया; हम सब काकाजी के सेवक हैं। गुरुजी के प्रेम के कारण मैं 'ना' नहीं बोल सका, लेकिन भीतर में मुझे अच्छा नहीं लग रहा था।

ओ.पी. अग्रवाल साहेब ने बताया ना कि हम कई लोग काकाजी के साथ जुड़े हुए थे। काकाजी के प्रेम में हम सब डूबे हुए हैं। लेकिन हम को मालूम नहीं कि काकाजी कौन-सी मिल की धोती पहनते थे और कैसी मोजड़ी पहनते थे। गुरुजी को काकाजी के साथ इतना प्रेम, इतने उनकी मूर्ति में रसरूप हो गए हैं। तो काकाजी क्या पहनते थे, कौन-सी मिल का कपड़ा था और वो मोजड़ी भी बनवाई। वो सतत् काकाजी के चिंतन में, योगीजी महाराज के चिंतन में, स्वामिनारायण भगवान के चिंतन में रहते हैं। उनमें रहते हुए अपने साथ–हम सब के साथ मिलकर हमें भगवान में जोड़ते हैं। **साधु का काम है–हम सभी को प्रभु में जोड़ना।**

गुणातीतानंदस्वामी सोरठ में–पूरे एरिया में छा गए थे। एक साधु उनके पास गए थे और पूछा कि आप गुणातीतानंदस्वामी हैं ? वे बोले नहीं कि मैं गुणातीतानंदस्वामी हूँ। उन्होंने कहा–सब कहते हैं मुझे। मैं तो साधु ही हूँ, भगवान का सेवक हूँ।

तो पूछा, आपने कोई योग सिद्ध किया है ?

वो बोले–नहीं, मैंने योग सिद्ध नहीं किया है।

आपने कोई तपस्या करी है ?

वो बोले–नहीं, मैंने कोई तपस्या नहीं करी है।

आपने वेदांत, उपनिषद् पढ़ा है ? संस्कृत भाषा आप जानते हो ?

वो बोले-नहीं, मैं नहीं जानता हूँ।

वो चक्कर में पड़ गया कि सारे सौराष्ट्र में तो–गुणातीत, गुणातीत, गुणातीत ! और ये बोलते हैं कि मुझे कुछ नहीं आता है-कुछ नहीं पता है, कुछ योग नहीं करा है।

फिर उन्होंने पूछा कि आपको आता क्या है ? मैं पूरे देश में फिरा, आपके बारे में इतनी महिमा की बातें सुनी हैं। और आप बोलते हैं कि आपको कुछ नहीं आता है। तो आपको क्या आता है ?

तब गुणातीतानंदस्वामी ने बताया कि छोटा बालक यदि कीचड़ में गिर जाता है, गंदा हो जाता है और अगर उनके पिता सामने आ जाएं, तो वो बोलेगें कि हट तू, मेरे कपड़े बिगाड़ देगा। उससे भले कितना ही प्रेम है, लेकिन पिता उसको उठा नहीं लेगा। वो गंदे बालक को माता लेकर साफ-सुथरा बनाती है, स्नान कराती है, नए कपड़े पहनाती है और फिर पिता को देती है। तो, पिता उसको खिलाते हैं। इस तरह **माया कीचड़ में पड़ी हुई आत्माओं को साफ-सुथरा करके प्रभु के चरण में हम भेजते हैं – यह आता है।** इतना तो किसी को नहीं आता है। हमारे भीतर क्या दोष है, क्या राग है, क्या आसक्ति है वह हमें मालूम नहीं है। **ये लोग जीवन परिवर्तन करने का काम कर रहे हैं।**

ये सब निकाल कर एक युवान लड़के को दीक्षा दी। ध्रुव को दीक्षा देकर **'यज्ञप्रिय'** बनाया। बहुत अच्छा नाम दिया, **शास्त्रीजी महाराज के कार्य के सौ साल की स्मृति रहेगी।** शास्त्रीजी महाराज का नाम 'यज्ञपुरुषदास' था। **'यज्ञप्रियस्वामी'** शास्त्रीजी महाराज के ऐसे प्रिय संत–'यज्ञप्रिय' ! यह आसान नहीं है। उसको पूछो कि तुझे क्या तकलीफ आई है जीवन में ? यंग है अभी। बीस साल के आस-पास का है। उसके जीवन में कोई कठिनाई नहीं आई है, कोई प्रॉब्लेम्स नहीं आई है। कोई सिगरेट पीता है, गुटका खाता है–हम वह नहीं छुड़ा सकते हैं। घंटे भर में जगत को छुड़ा कर भगवे पहना कर उसे हाथ में माला दे दी। वो आसान काम नहीं है। ऐसे प्रभुधारक संत होते हैं वही वो कर सकते हैं, दूसरा नहीं कर सकता है। वो साधु की निशानी है। ऐसे साधु से जुड़ना–अक्षरपुरुषोत्तम उपासना का रहस्य है। वालिया साहेब ने भी बताया कि ऐसे ब्रह्मस्वरूप साधु में भगवान हैं ऐसा नहीं मान सकते, क्योंकि वे हमारे जैसे दिखाई पड़ते हैं। रामचंद्र भगवान खुद मानव रूप में आए, लेकिन उन्हें अयोध्या की गद्दी नहीं दी, वनवास दिया-जंगल में भेज दिया। आज बड़े-बड़े मंदिर बनाते हैं, उनके बारे में झगड़ते हैं। लेकिन जब वो प्रगट थे, तो उनको जंगल में जाकर खाना भी नहीं दिया। कृष्ण परमात्मा खुद मानव रूप धारण करके आए। आज कृष्ण परमात्मा की सोने की मूर्तियाँ, बड़े-बड़े मंदिर बन रहे हैं। लेकिन तब कृष्ण

परमात्मा को किसी ने थाल नहीं दिया। आज बड़े-बड़े थाल देते हैं। गोपियाँ नसीबदार–जिन्होंने उन्हें पहचाना। वो गोलोकवासी बन गए। पांडव नसीबदार–जिन्होंने पहचाना। वो गोलोकवासी बन गए। मानव ने राम को नहीं पहचाना। बंदरों ने राम को पहचाना, तो हनुमानजी प्रभु के स्वरूप बन गए और सब बंदर बैकुण्ठवासी बन गए। **भगवान को (प्रगट रूप में) पहचानने से ही हमारी आत्मा का कल्याण होता है, उसके बिना नहीं होता है।** जब भगवान प्रगट होते हैं, तब पहचानना आसान नहीं होता है। हमारे जैसे दिखाई देते हैं, दो हाथ-दो पैर, खाते हैं-पीते हैं। कई बुद्धिमान लोग ऐसा कहते हैं कि आप **'व्यक्ति पूजा'** करते हो। थोड़ी बुद्धि मिली तो–अब लोग 'रॅशनल' हो गए ! आईन्स्टाईन ने बताया है कि भगवान ने मानव को जो बुद्धि दी है, इनमें से कॉमन मास की बुद्धि ८-९ प्रतिशत इस्तेमाल हुई है और जो बड़े-बड़े साईन्टिस्ट हुए हैं उनकी ११ प्रतिशत इस्तेमाल हुई है। इसमें से पूरा पृथ्वी का चक्कर बदल गया है। ११-१२ प्रतिशत ही इस्तेमाल हुई है सौ प्रतिशत में से ! और... **जिनकी ८-९ प्रतिशत ही बुद्धि इस्तेमाल हो रही है, वे जिन्होंने हमें १०० प्रतिशत बुद्धि दी है उनके बारे में ही सवाल उठाते हैं कि आप भगवान की कैसे 'व्यक्ति पूजा' करते हो ?**

यहाँ से अगर प्राईम मिनिस्टर जा रहे हों, तो हम इधर से नहीं जा सकते। सारा रोड क्लोज़ हो जाता है। दो-दो, तीन-तीन घंटे तक आदमी जा नहीं सकता है। क्या हम पूछते हैं कि क्यों ? क्या हम कहते हैं कि वो भी आदमी है, मैं भी आदमी हूँ; उनको भी दो आँख है, मुझे भी दो आँख हैं। तो उनके लिए रास्ता बंद किया, वो मेरे लिए खोल दो। पुलिस एक थप्पड़ लगाएगा कि चल-चल, किधर से आया ? उनके लिए ऐसा होता है; क्योंकि उन्होंने प्राईम मिनिस्टर की सत्ता धारण करी है। **ये साधु ने प्रभु की सत्ता धारण करी है, इसलिए हम उनका पूजन करते हैं, उनका गुणगान गाते हैं। वो प्रभु में रहते हैं–उनके द्वारा प्रभु विचरते हैं। ऐसे साधु के द्वारा ही प्रभु की प्राप्ति होती है।** शास्त्रों में बोला है कि प्रभु के चरणार्विंद में निमग्न रखो। प्रभु के चरणार्विंद की सेवा करो। हम मंदिर में जाते हैं, तो दूर से दर्शन होते हैं। प्रभु के पास तो जाने को भी नहीं मिलता। तो उनके चरणार्विंद की सेवा कैसे करें ? उनके चरण को धोएंगे कैसे ? तो उसका मतलब यह है कि हम अपने शरीर को लेकर अपने चरणार्विंद से यानि–अपने पैर से चलते हैं। **भगवान ये पृथ्वी पर चलते हैं तो उनके चरणार्विंद कौन हैं ? साधु प्रभु के चरणार्विंद हैं। उनकी पूजा करने से भगवान की पूजा होती है।** उनके दर्शन से प्रभु का दर्शन होता है। उनसे जुड़ने से हम प्रभु में डायरेक्ट जुड़ जाते हैं। पर, 'साधु' ऐसा है कि सदा 'दासत्वभाव' में रहता है। वो नहीं बोलता कि मैं भगवान हूँ। गुणातीतानंदस्वामी ने बताया है कि यह 'दासत्वभाव' कैसा है। घर में जितनी पुरुष की हकूमत चलती है, उतनी उनकी वाईफ की भी चलती है। कोई किसी की धर्मपत्नी को पूछेगा कि यह मकान किसका है ? धर्मपत्नी कहेगी-यह मेरा घर है। उसको मालूम है कि मैं मेरे पति के साथ जुड़ी हुई हूँ, इसलिए यह मेरा घर है। यदि तलाक हो जाएगा, तो घर से बाहर निकल जाएगी। इसलिए साधु ऐसे दासत्वभाव से भगवान के साथ जुड़े रहते हैं, तो भगवान का पूरा ऐश्वर्य उनके द्वारा काम करता है।

जीवन में ऐसे साधु मिलना, वो हम पर भगवान की बहुत बड़ी कृपा। भगवान जब प्रसन्न होता है, तो क्या देता है ? गुणातीतानंदस्वामी ने बताया है भरवाड़ प्रसन्न होता है भेड़-बकरे दे देता है, कोई फार्मर प्रसन्न होता है तो खेत में जो आम आए हों, वो दे देता है। तो **भगवान प्रसन्न होते हैं तो साधु की भेंट देता है, जो प्रभु का माहात्म्य समझा कर हम सब को परम शांति, परम सुख, आनंद के भोक्ता बनाते हैं।**

ऐसे साधु मिलना बहुत कठिन हैं और मिले तो उनको पहचानना बहुत कठिन है और उनको पहचानने के बाद दो हाथ जोड़ कर उनकी आज्ञा में रहना उससे भी कठिन है। आप दिल्लीवासियों को बहुत-बहुत अभिनंदन ! दिल्ली-पंजाब वाले सब को इतना अभिनंदन कि गुरुजी को तो पहचाना है; उनका 'माहात्म्य' भी है। 'माहात्म्य' यह कि उनको पहचान कर उनकी आज्ञा मान कर सब जीवन जीते हैं। तो, आप सब को बहुत बड़ा फल मिलेगा। अक्षरपुरुषोत्तम महाराज की उपासना के लिए शास्त्रीजी महाराज ने गुलज़ारीलाल नंदाजी–जो एक समय में प्राईम मिनिस्टर बने, होम मिनिस्टर बने–उनको आज्ञा करी थी कि दिल्ली में अक्षरपुरुषोत्तम का मंदिर बनाना। काकाजी ने वो ही आज्ञा गुरुजी द्वारा पूरी

करके ये मंदिर बनाया। **ये शास्त्रीजी महाराज का संकल्प–उनके द्वारा हो रहा है।** ऐसे साधु हमें मिले। उनकी मूर्ति की स्मृति करके स्वामिनारायण मंत्र का जाप करना। उनकी आज्ञा में रहने से हमारे भीतर का अहंकार, आसक्ति, विषय सब चले जाएंगे। हम परम शांति, परम सुख, परम आनंद के भोक्ता बन जाएंगे...

जैसे फिज़िकल बॉडी को ऑक्सीजन की आवश्यकता होती है, इसी तरह आत्मा को साधु-संतों की महिमा, गुणगान गाने-सुनने की आवश्यकता होती है। **ऐसे प्रागट्य पर्व के दिन, ऐसे मंगलकारी अवसर पर ये मौका मिलता है।** आज हम सब को यह मौका मिला है। आज गुरुजी को प्रार्थना करते हैं–आप सच में योगीजी महाराज, काकाजी, पप्पाजी, स्वामिजी की प्रसन्नता के पात्र बने हैं। योगीजी महाराज परम 'रांक' स्वरूप, प्रेमल स्वरूप। काकाजी को देखो– डिफरन्ट व्यक्तित्व ! साधुता की मूर्ति–योगीजी महाराज ! इतने बड़े-पर इतने सादे कपड़े। काकाजी को देखो तो शीशे के सामने खड़े रह कर पाँच-दस मिनिट यूं टोपी ठीक करते। कपड़े भी इतने अच्छे। मैंने (आज) कपड़े जो पहने हैं, वो काकाजी पहनते थे। बाह्य दृष्टि से रजोगुणी दिखाई देते थे, लेकिन पूरी साधुता की मूर्ति थे। योगीजी महाराज परम साधुता की मूर्ति। गुरुजी ने योगीजी महाराज में प्रभु देखा-काकाजी में प्रभु को स्वरूप देखा और पप्पाजी– परम शांत पुरुष–उनमें भी प्रभु देखा ! स्वामिजी–जो कभी बैठते नहीं हैं, घूमते रहते हैं-घूमते रहते हैं–उनको भी प्रभु का स्वरूप माना। प्रभु का दर्शन हो तो ही यह शक्य होता है। हम सब में वो प्रभु देखते हैं, इसलिए वो हमारे लिए प्रभु बन गए हैं। ऐसे गुरुजी के प्रागट्य पर्व पर प्रार्थना करते हैं कि आपने काकाजी, पप्पाजी, बा, स्वामिजी सब को प्रसन्न करके योगीजी महाराज, शास्त्रीजी महाराज और स्वामिनारायण भगवान की उपासना का प्रवर्तन का काम ये नॉर्थ इंडिया में खूब अच्छी तरह से किया है, तो आप सब को प्रभु रूप देखते हैं; इसलिए आप हमारे हृदय में प्रभु के रूप में स्थापित हो गए हो। हम भी सभी में प्रभु का दर्शन करें, सभी का गुणगान-महिमा गाएं। जितनी हो पाए इतनी सेवा करके आपकी और गुणातीत पुरुषों की प्रसन्नता के पात्र बन जाएं ऐसे आशीर्वाद बरसाना–ऐसी आपके प्रागट्य दिन पर आपको और स्वामिजी के चरणों में प्रार्थना !

प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी

...आप सब लोगों को गुरुजी के साथ बहुत लगाव है। आप सब की प्रीति देख कर मुझे बहुत खुशी हुई है। पाँच घंटे से आप लोग बैठे हो, खूब शांति से-भक्ति से, इतने प्रेम-आदर से दर्शन करते हैं-बातचीत सुनते हैं और खूब शांति से आनंद ले रहे हो। चार घंटे से मैं ऐसा दर्शन कर रहा हूँ। एक बात की आपके पास से अपेक्षा है। काकाजी का एक संकल्प–शास्त्रीजी महाराज का संकल्प पूर्ण करने की काकाजी की इच्छा से–गुरुजी निमित्त बने ! सो, एक ही बात आपको कहने की इच्छा करता हूँ। गुरुजी के साथ एक ऐसा लगाव–मैत्री कर लो, **उनके साथ कपट मत रखो-अंतराय मत रखो।** सरल होकर उनकी आज्ञा सिर पर चढ़ा कर उनको प्रसन्न करने के लिए अवश्य प्रयत्न करते रहना। **जितनी आपकी सरलता, इतना आपका प्रभु के साथ संबंध।**

मेरी एक बात ध्यान से सुनना। मानवी की–साधक की ऐसी कोई ताकत नहीं है कि अपने पुरुष प्रयत्न से वह अपनी आँख को पवित्र बना सके, अपनी जीभ को पवित्र, विवेकी और विनम्र बना सके... इसलिए मैं गाँव-गाँव में युवकों को बोलता हूँ और एक ही बात करता हूँ कि **अपनी कोई ताकत नहीं है कि हम अपने पुरुष प्रयत्न से सुखी हो सकें।** गुरुजी का आज प्रागट्य दिन है; साहेब ने भी बहुत अच्छी सीधी-सादी, सरल, सर्वोपरि उनकी महिमा कही। गुरुजी की महिमा की बात बहुत अच्छी बतलाई। तो आज जो आए हो–ऐसा एक पिता-पुत्र का संबंध रख करके–खूब सरल होकर उसके आँख के इशारे से अपनी देह को वरताना। ऐसा संबंध यदि हो जाएगा, तो देह और घर मंदिर बनने में कोई समय नहीं लगेगा। **सरलता साधना का प्राण है। संतों के चरणों में रह कर साधक, साधु, सेवक यदि सरलता से जिए, तो लाखों साल में जो नहीं होता, वो सुख, शांति और आनंद पाँच साल-दस साल में प्राप्त कर सकता है।**

तो आज एक अद्‌भुत गोल्डन मौका है। **गुरुजी के रुप में काकाजी ने अपनी भेंट यहाँ दे दी है।** खूब सरल साधु, खूब विवेकी, खूब आत्मीय। **भक्तों का दास बन कर–एक धुनी लगा कर, एक अद्‌भुत समाज की सेवा कर रहे हैं...**

आप लोग बहुत भाग्यशाली हैं, आपके ऊपर भगवान की प्रसन्नता है। भगवान कृष्ण, भगवान राम, भगवान शिवशक्ति, भगवान स्वामिनारायण, सद्‌गुरु नानक, सद्‌गुरु कबीर जैसे प्रभु और प्रभु के मेसेन्जर समान भगवान के संतों की आपके ऊपर बहुत कृपा है, जिसके फलस्वरूप गुरुजी जैसे संत को दिल्ली की धरती पर रखा। तो **हमारी तो एक ही इच्छा है कि गुरुजी के साथ कपट मत रखना, अंतराय नहीं रखना-अधिकार दे देना।** सरल होकर स्वीकार करना बस। तो लाखों सालों में जो सुख, शांति, आनंद प्राप्त नहीं हो सकता है, वो सुख, वो सच्चा आनंद और शांति आपको प्राप्त हो जाएगा। आपकी देह और घर मंदिर बनने में कोई-कोई-कोई दिक्कत नहीं आएगी और **सहजता से सब अच्छा हो जाएगा।**

संसार में आज कितनी विडंबना है ? टोटल संसार आज मोस्ट प्रॉब्लेमॅटिक हो गया है। तन की, धन की, मन की कई प्रकार की बीमारियाँ चल रही हैं। इन सभी बीमारियों को हटाने के लिए और सच्चा सुख, शांति और आंनद प्राप्त करने के लिए, आप लोगों के लिए—दिल्ली वालों के लिए सुंदर मौका प्रभु ने दिया है।

तो आज के मंगलकारी दिन भगवान कृष्ण, भगवान राम, भगवान शिवशक्ति, भगवान स्वामिनारायण, शास्त्रीजी महाराज, योगीजी महाराज, काकाजी, पप्पाजी, स्वामिजी, महंतस्वामी, डॉ. स्वामी, साहेब, स्वामिजी-सब के चरणार्विंद में एक ही प्रार्थना है कि हम सब सरल बन कर उनके चरणों में सहजता से साधना कर सकें ऐसा बल, बुद्धि, शक्ति प्रभु-गुणातीत पुरुष देते ही रहें, देते ही रहें यही प्रार्थना।

(ध्वनिमुद्रण से संकलित आशीर्वचन एवं उद्‌बोधन)

✡✡✡

प्रगट के पंचम पुरुषार्थ के प्रवर्तक प.पू. काकाजी महाराज की जयंती !

12 जून... हम सभी के संगी होते हुए भी असंगी ऐसे **प.पू. काकाजी महाराज** का प्रागट्य दिन ! गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज द्वारा प्रवर्तित श्री अक्षरपुरुषोत्तम की युगल उपासना एवं प्रगट की सर्वोपरि निष्ठा से इन्होंने गुरुहरि योगीजी महाराज के स्वरूप को पहचाना और **एक क्रांतिकारी भव्य इतिहास की रचना की।** गुरुहरि योगीजी महाराज के हर एक चरित्रों में—कैसी भी कठिन से कठिन कसौटियों में प.पू. काकाजी को स्वप्न में भी मनुष्यभाव-मायिकभाव नहीं आया। इससे भी अधिक संबंध वाले मुक्तों के नुकीले चुभते स्वभावों को, अंटशंट व्यवहार को, अत्यधिक अपमानित शब्दों को भी उन्होंने गुरुहरि योगीजी महाराज का प्रसाद ही माना। इतना ही नहीं, उन लोगों का विपरीत समय आने पर आधी रात को वे साथ खड़े रहे ! **वन वे ट्रॉफिक रख कर सभी को सुखी करने एकतरफा प्रेम दिया।** उन्हें सभी खूब जँचते। **सागर की गहराई नाप नहीं सकते, आकाश के क्षितिज को पकड़ नहीं सकते; ठीक उसी प्रकार प.पू. काकाजी की करुणा का कोई छोर दिखाई नहीं पड़ता।** बिना कोई भेदभाव या फर्क देखे बृहद् गुणातीत समाज के आबाल, वृद्ध, जवान, संतों, बहनों, युवकों और गृहस्थों के व्यवहारिक व आध्यात्मिक विकास के लिए ***'भजन का बल लो और मूर्ति में रहो'* की अपनी जीवनशैली सिखाने का उन्होंने अविरत परिश्रम किया।**

समग्र जीवनभर गुणातीत समाज की ढाल बन कर प.पू. काकाजी जीए। शिष्यों को अपने से सवाया बनाने में उन्होंने अपने गुरु के प्रति भक्ति व सच्चा आनंद माना। सच, **अक्षरधाम से आई यह दिव्य विभूति बीते हुए कल, वर्तमान व भविष्य के सभी मुमुक्षुओं के लिए एक अमूल्य खज़ाना है।**

प.पू. काकाजी तत्त्व से अमर हैं—जीवंत हैं—मौजूद हैं। अभी-अभी की ही बात है कि प.पू. गुरुजी करीब एक सप्ताह से विचार कर रहे थे कि प.पू. काकाजी अकसर **'अस्मिता'** की बात करते थे और हम सुनते भी थे। हमने

भी यह शब्द कई बार दोहराया। लेकिन यह **'अस्मिता'** शब्द का एक्झॅक्ट मिनींग क्या ? और... इसका अर्थ अब किससे पूछें ? प.पू. काकाजी भी तो स्थूल देह से विद्यमान नहीं। पर, कमाल की बात यह है कि– अबकी बार की **'गुजरातधारा'** में सबसे पहले पृष्ठ पर ही **श्री कनैयालाल मुंशी** द्वारा **'अस्मिता'** का अर्थ समझाता एक पॅरेग्राफ आया ! और... श्री कनैयालाल मुंशी तो गुजराती भाषा के साक्षर ! यूं किसी भी रूप में आज भी-पुराने हों चाहे नए हों, सभी मुक्तों को आज भी उनकी हाज़िरी का सहज ही अहसास होता है-अनुभव होता है।

प.पू. काकाजी के स्थूल शरीर छोड़ने के बाद दिल्ली में **प.भ. राकेशभाई** सत्संग में आए। उन्होंने तो प.पू. काकाजी का स्थूल रूप से दर्शन भी नहीं किया था। **सभी गुणातीत केन्द्रों की नींव में प.पू. काकाजी ही हैं, ये बातें उन्होंने सुनी थी।**

लेकिन, सब जगह वो दर्शन करने गए और कई जगह **प.पू. काकाजी की मूर्ति–**

साईड ट्रेक करी

या

छोटी रखी

या

नहीं ही रखी देखी,

तो उन्हें बहुत दुःख हुआ और... वो सहज ही बोल उठे कि ओहो ! प.पू. काकाजी का व्यक्तित्व कैसा अद्‌भुत और महान होगा कि आज स्थूल रूप से उनके अंतर्धान होने के बाद भी, उनकी प्रतिभा-उनका तेज अपनों से ही सहा नहीं जाता होगा, तभी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से समाज में उनकी आध्यात्मिक कक्षा ओछी दिखाने की ये निरंतर कोशिश जारी रखते हैं। शुद्ध गुणातीत परंपरा में उनकी समकक्ष मूर्ति रखने तक से ये डरते हैं कि कहीं वह मूर्ति देख कर, प.पू. काकाजी का ज़िकर होते उनसे प्रभावित होकर हमारी दुकान का ग्राहक वहाँ चला ना जाए !

'स्वामी की बातें'– प्र. ९ की इक्यावनवीं (५१वीं) बात इस बात की पुष्टि करती है। मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी कहते हैं–

'हमारे यहाँ इस साधु के सिवा अन्य किसी के भी भले गुण गाओ, तो किसी को हर्जा नहीं है; पर इस प्रगट भगवान या उनको सांगोपांग रखे साधु का बखान करो तो पसंद नहीं आता।'

दो सौ साल से यह इतिहास चला आ रहा है। खूब सावधानी रख कर वचनामृत में **'गुरु गुणातीत'** का किसी जगह नाम नहीं आने दिया ! परमहंस खूब अच्छी तरह जानते थे कि **मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी** की अजोड़ साधुता व अद्‌भुत व्यक्तित्व के सामने हम सभी फीके पड़ते हैं। पर, **आज** हम देखते हैं कि **वही मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी की सोने की मूर्ति मंदिर में स्थापित हैं !**

श्रीजी महाराज को अखंड धारे हुए एवं गुरुहरि योगीजी महाराज ने स्वयं चुन कर पसंद करके जिन्हें अपना आध्यात्मिक वारिसदार बनाया उन प.पू. काकाजी महाराज को हम अपनी कीर्ति बढ़ाने की लालसा में-चाहना में **सब समझते हुए भी** शुद्ध गुणातीत परंपरा में आज स्वीकार करने तैयार नहीं, तो **हमारी योगीजी महाराज के प्रति ही क्या निष्ठा ? हमारा ये कैसा ओछापन ?** कोई कहे कि 'मैं कृष्ण को तो मानता हूँ, पर गीता को नहीं मानता'– इसका सीधा-सादा अर्थ है कि वो कृष्ण को ही टोटल नहीं मानता होगा। ठीक उसी प्रकार यदि गहराई से सोचेंगे तो **हमने गुरुहरि योगीजी महाराज को ही तत्त्व से नहीं पहचाना होगा, तभी हम शुद्ध 'गुणातीत स्वरूप' के रूप में प.पू. काकाजी का स्वीकार नहीं कर पा रहे।** और... **यह हम अपने ही पैरों पर कुल्हाड़ी मार रहे हैं !!!**

कड़वा सच यह है कि आध्यात्मिकता की सर्वोत्कृष्ट स्थिति पर पहुँचे हुए 'गुणातीत संत' की यही निशानी-लिटमस टेस्ट है कि उसका 'निजी कहा जाता' समाज ही उसे साईड ट्रेक करके 'बीलो स्टेटस' दिखाने की अथक् चालाकी करता रहता होगा।

श्री कृष्ण की प्रतिभा से यह बात खूब टॅली होती है। बौद्ध धर्म व जैन धर्म खूब अच्छी तरह जानता था कि हमारे धर्म का प्रचार करने में सबसे बड़ी रुकावट सिर्फ 'श्री कृष्ण' बन सकते हैं। **श्री दिनकर जोशी** ने अपनी पुस्तक ***'कृष्णं वंदे जगद्‌गुरुम्'*** में बखूबी बताया है कि–

'कृष्ण एक ऐसा व्यक्तित्व है कि जिसका स्वीकार किए बिना किसी का गुजारा नहीं। कृष्ण के बाद प्रगट हुए बौद्ध तथा जैन धर्म को भी ***अपने मार्ग में श्री कृष्ण ही अडिग शिला के समान प्रतीत हुए और इसलिए राम या अन्य कोई हिन्दु देव-देवी को नहीं, मात्र श्री कृष्ण को ही*** *बौद्ध धर्म ने 'मार' कहा और नीचे की कोटि का व्यक्ति चित्रित करने की कोशिश की; तो जैन धर्म ने उन्हें 'गीता' में दिए हिंसा के उपदेश के लिए नरक में भेजने की सजा दी है। कृष्ण ने तो हिंसा का उपदेश दिया; किन्तु श्री राम ने तो अनेक गुणा अधिक हिंसा की थी और ऐसा होने पर भी श्री राम को नरक की सजा नहीं दी गई!* ***यह बात कृष्ण के व्यक्तित्व के बाद की शताब्दियों में अन्य धर्म उपदेशकों को कितना विराट प्रतीत हुआ होगा, इसका ही समर्थन करती है।'***

यूं फांस की भाँति प.पू. काकाजी हमें भीतर में कहीं चुभ तो नहीं गए है, जिससे कि अपनी छुपी महत्त्वाकांक्षाओं एवं कीर्ति की लालसा में, स्वयं की महिमा बढ़ाने, भक्तों को गुमराह करके **हम यह इतिहास दोहरा रहे हैं ?**

यह प्रश्न हम अपने भीतर में ही पूछें। क्योंकि– 'भीतर का जोगी' के सिवा और कोई इस बात का जवाब नहीं दे पाएगा। **हम सभी को धोखा दे पाएंगे, पर भीतर में बैठे प्रभु या संत कदापि धोखा नहीं खाएंगे।**

✡✡✡

भजन

(राग — ज़िंदाबाद - ज़िंदाबाद ए मोहब्बत ज़िंदाबाद............)

कृष्ण को राजी किया, अभिप्राय की भक्ति से,
बना पार्थ, नारायणस्वरूप नर से॥

धन्यवाद, धन्यवाद, योगीबापा तुम्हें धन्यवाद
योगीबापा तुम्हें धन्यवाद
धन्यवाद, धन्यवाद, हे काकाजी तुम्हें धन्यवाद
संबंध गुरुजी का देकर
संबंध गुरुजी का देकर
कर दिया हमें निहाल
धन्यवाद, धन्यवाद, हे काकाजी तुम्हें धन्यवाद
हे काकाजी तुम्हें धन्यवाद

द्वैत नहीं विशिष्ट अद्वैत है, काकाजी का ही रूप हो तुम
उद्धारक चैतन्यों के, गुणातीत समाज की शान हो तुम,
पहचान काकाजी की देना, यही तेरा अरमान,
धन्यवाद, धन्यवाद, हे काकाजी तुम्हें धन्यवाद...
हे काकाजी तुम्हें धन्यवाद...

सहज स्वाभाविक क्रिया अलौकिक पल पल प्रेरक हैं भगवान
मानव से महामानव करने, तेरी क्रिया, तेरा अभियान,
वाणी तेरी ब्रह्मसरिता, वर्तन तेरा ब्रह्मज्ञान,
धन्यवाद, धन्यवाद, हे काकाजी तुम्हें धन्यवाद....
हे काकाजी तुम्हें धन्यवाद....

मुक्तों के वृत्ति स्वभाव का प्रवाह प्रभु ओर तू मोड़ दे
बाह्य जगत व अंतर्मन के, मायाजाल को तोड़ दे,
करण प्रभु का बना कर तू, शाश्वत् सुख देता अपार,
धन्यवाद, धन्यवाद, हे काकाजी तुम्हें धन्यवाद....
हे काकाजी तुम्हें धन्यवाद....

आ... आ... आ.... आ....आ....
बंधे रहें ना मान्यताओं में, आदर्शों और सत्यों में,
परम सत्य स्वरूप से बंधकर, निर्बन्ध अब हम हो जाए
'स्व' तुझमें विलीन कर दे, बस एक तेरा आकार रहे
'स्व' तुझमें विलीन कर दे, बस एक तेरा आकार रहे
कृष्ण से जैसे पार्थ जुड़ा, यूं तुमसे जुड़ें हम नाथ !
धन्यवाद, धन्यवाद, हे काकाजी तुम्हें धन्यवाद....
हे काकाजी तुम्हें धन्यवाद....
धन्यवाद....धन्यवाद....धन्यवाद....

व्रतोत्सवसूची

(1)	दि. 20.5.2005,	शुक्रवार	–	एकादशी, व्रत
(2)	दि. 22.5.2005,	रविवार	–	नृसिंह जयंती
(3)	दि. 1.6.2005,	बुधवार	–	**गुरुहरि प.पू. पप्पाजी का दृष्टा दिन** 'गुणातीत ज्योत' स्थापना दिन
(4)	दि. 2.6.2005,	गुरुवार	–	एकादशी, व्रत
(5)	दि. 3.6.2005,	शुक्रवार	–	ब्रह्मस्वरूप गुरुहरि योगीजी महाराज की प्रागट्य तिथि
(6)	दि. 12.6.2005,	रविवार	–	**ब्रह्मस्वरूप प.पू. काकाजी महाराज का प्रागट्य दिन** *(सुबह 6:30 से 9:00 मनाएंगे)*
(7)	दि. 17.6.2005,	शुक्रवार	–	भगवान स्वामिनारायण का स्वधामगमन दिन
(8)	दि. 18.6.2005,	शनिवार	–	भीम एकादशी, व्रत
(9)	दि. 21.6.2005,	मंगलवार	–	वटसावित्री
(10)	दि. 2.7.2005,	शनिवार	–	एकादशी, व्रत
(11)	दि. 8.7.2005,	शुक्रवार	–	रथयात्रा

धुलेन्डी—26 मार्च 2005

पू. ध्रुव की पार्षद दीक्षा विधि निमित्त महापूजा करते पू. वशीभाई

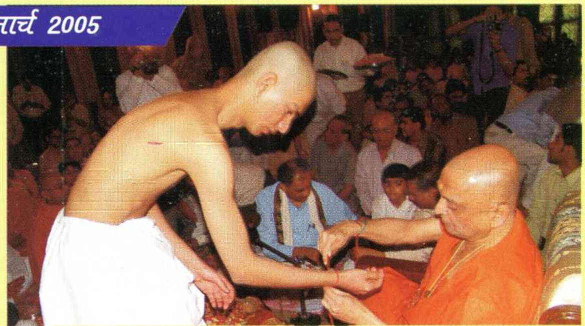

कलावा बांध कर पू. ध्रुव को ब्रह्मसंबंध देते प.पू. गुरुजी

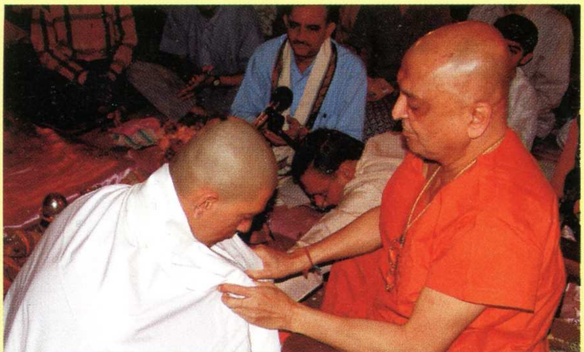

गातरिया ओढ़ाते प.पू. गुरुजी

प.पू. गुरुजी के साथ पू. ध्रुव भगत

27 मार्च 2005

पू. यज्ञप्रियस्वामी की भागवती दीक्षा विधि निमित्त गुणातीत स्वरूपों की निश्रा में महापूजा

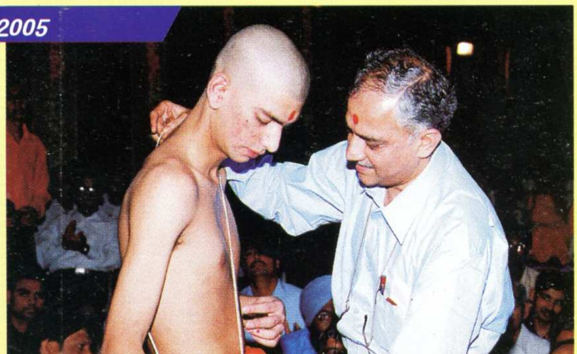

जनेऊ पहनाते पू. वशीभाई

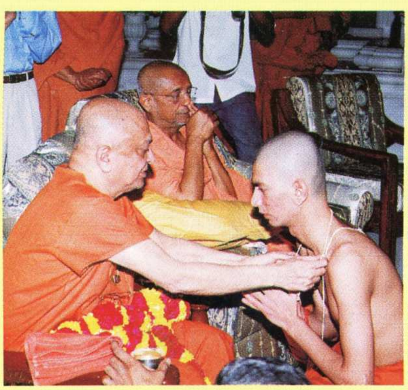

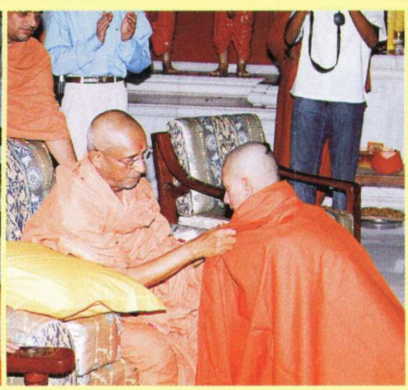

कंठी पहनाते प.पू. गुरुजी, भगवा गातरिया ओढ़ा कर गुरुमंत्र देते प.पू. स्वामिजी, पाघ पहना कर आशीर्वाद देते प.पू. साहेबजी

प.पू. गुरुजी को
हार अर्पण करते प.भ. बलरामजी

प.पू. गुरुजी को
हार अर्पण करते प.भ. वालिया साहेब

प.पू. गुरुजी को अमदावाद मंडल की ओर से
हार अर्पण करते प.भ. शैलेषभाई

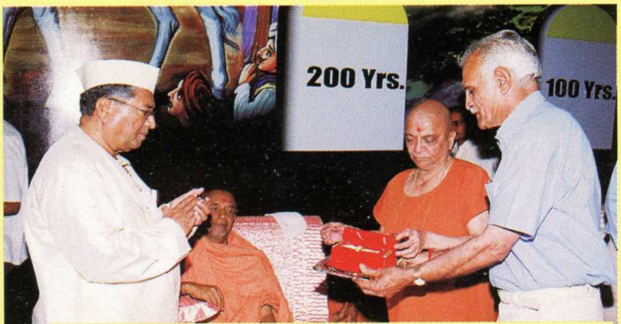

'प्रार्थना की शक्ति' पुस्तक का अनावरण करते
प.पू. गुरुजी

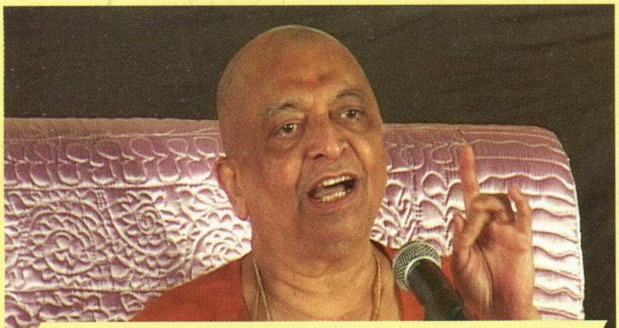

आशिष प्रदान करते प.पू. गुरुजी

आशिष प्रदान करते प.पू. साहेबजी

आशिष प्रदान करते प.पू. स्वामिजी

प.पू. स्वामिजी को ध्यान से सुनते प.पू. गुरुजी

ब्रह्मानंद की मस्ती में निर्दोष हास्य बिखेरतीं प.पू. दीदी...

प.पू. दीदी के साथ कु. प्राची...

कु. प्राची को प्रसादी का हार पहनातीं प.पू. दीदी

प.पू. ज्योति बहन, प.पू. दीदी एवं कु. प्राची

सभा में उपस्थित बहनें

सभा में उपस्थित हरिभक्त

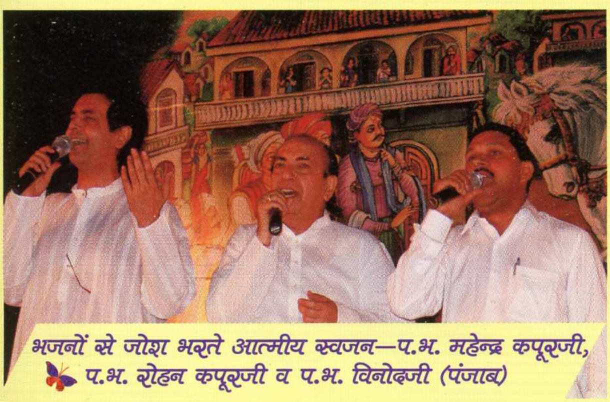

भजनों से जोश भरते आत्मीय स्वजन—प.भ. महेन्द्र कपूरजी, प.भ. रोहन कपूरजी व प.भ. विनोदजी (पंजाब)

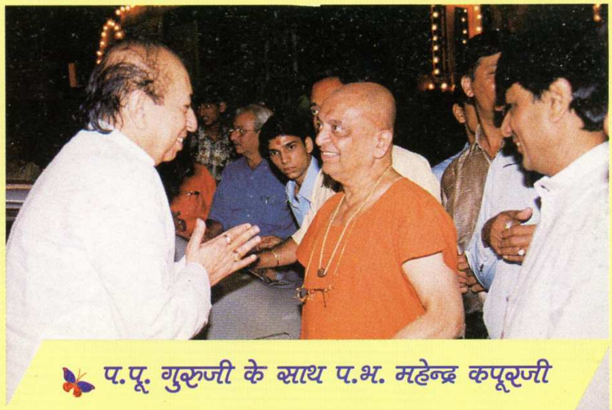

प.पू. गुरुजी के साथ प.भ. महेन्द्र कपूरजी

प.पू. साहेबजी को
हार अर्पण करते प.भ. नासा साहेब

प.पू. साहेबजी को
हार अर्पण करते प.भ. घनश्यामभाई अमीन

प.पू. साहेबजी को
शाल ओढ़ाते प.भ. समीरभाई

प.पू. साहेबजी को
मूर्ति अर्पण करते प.भ. पुरी साहेब

प.पू. साहेबजी को
भेंट अर्पण करते प.भ. धर्मपाल शर्मा

केक कटिंग

प.पू. स्वामिजी के साथ गुरुहरि प.पू. काकाजी
की इदम् स्मृति कराते प.पू. साहेबजी

R.N.I. 28971/ 77
Air Mail
'Bhagwatkripa' Bimonthly Magazine
Despatched on 15th of alternate months.
If undelivered please return to :—
Printer, Publisher, Editor :—
SHRI PRABHAKER RAO *FOR* YOGI DIVINE SOCIETY- DELHI
'Taad-dev', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg,
Ashok Vihar-III, Delhi-110 052 (India) Tel.: 2722 9327
Printed at : **Delux Offset Printers,**
308/4, Shahzadabagh, Opp. Rohtak Road, Daya Basti, Delhi

प.पू. गुरुजी की प्रार्थना स्वीकार कर -
हुबहु दर्शन देते
प.पू. काकाजी स्वरूप प.पू. साहेबजी

माहात्म्य गान करते...

पू. वशीभाई

पू. शांतिभाई साहेब (ब्रह्मज्योति)

प.भ. ओ.पी. अग्रवालजी

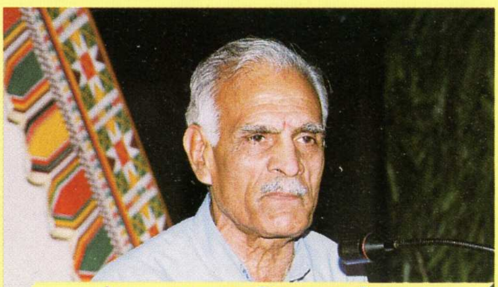

प.भ. वालिया साहेब

प.भ. ब्रिगेडियर नासा साहेब